दिल्ली प्रैस की सजग सरस युवा पत्रिका

जून 2024 ₹ 40.00

मुक्ता

सोशल मीडिया की हकीकत बताती लैंडी परागा की हत्या

फर्श से अर्श तक
नैंसी त्यागी

कबूतरबाजी के आरोप में फंसा बौबी कटारिया

गपोड़िए बन कर रह गए इंडियन पोडकास्टर्स

सक्सैस से कोसों दूर
शरवरी वाघ

मुक्ता

जून 2024 अंक : 1033

लेख

पुणे कार क्रैश मामले में जिम्मेदार कौन 10
रजत दलाल की चिंदी हरकतें 12
लैंडी परागा की हत्या का मामला 18
कबूतरबाजी में फंसा बौबी कटारिया 32
फर्श से अर्श तक नैन्सी त्यागी 34
कुबुद्धि के शिकार धीरेंद्र राघव 36
बड़े ब्रैंड पर भारी रेवंत हिमतसिंग्का 40

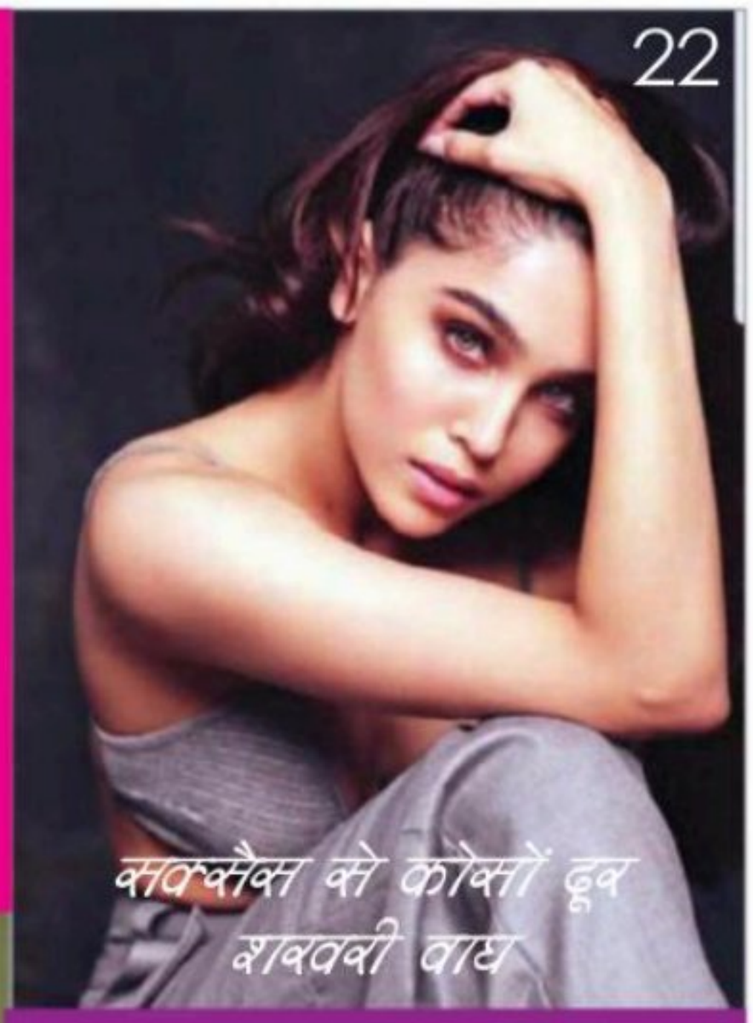

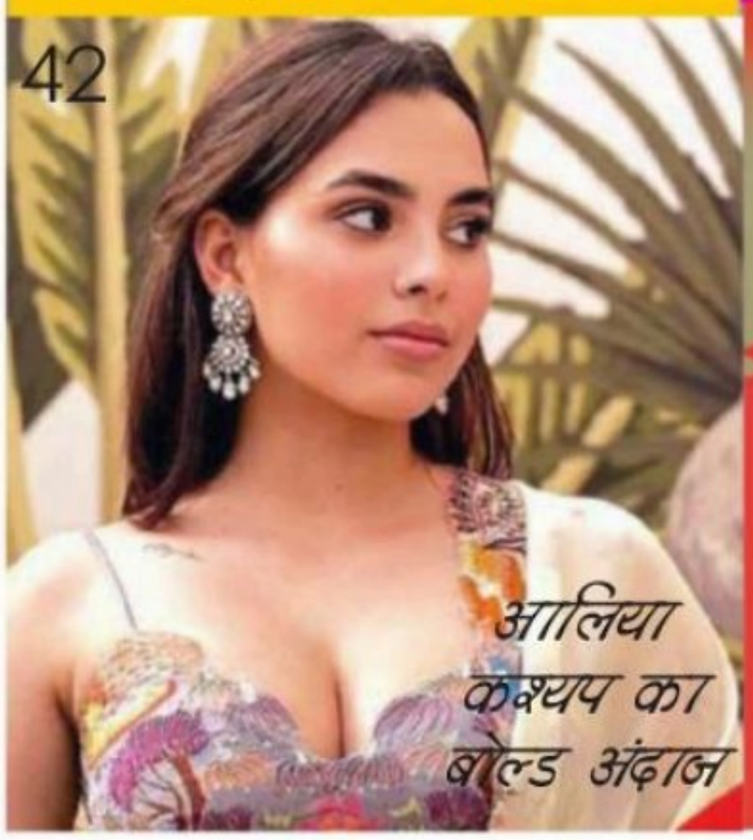

स्तंभ

लव लैटर्स 8
मुक्त विचार 9
प्रेम समस्याएं 20
टैक गैजेट्स 24
इंट्रैस्टिंग फैक्ट्स 26
वायरल रील्स 44

दिल्ली प्रैस
सामाजिक क्रांति की पत्रिकाएं
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)
33 पत्रिकाएं 10 भाषाएं

रचनाओं, स्तंभों व संपादक को पत्रों के लिए ईमेल :
editor@delhipress.biz

8447173456

निमंत्रणों प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल :
invities.pressrelease@delhipress.biz

ग्राहक विभाग के लिए ईमेल :
subscription@delhipress.in

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय : दिल्ली प्रैस भवन, ई-8 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अन्य कार्यालय : ● 31 ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845** ● बी-3, वडाला उद्योग भवन, नायगांव क्रौस रोड, वडाला, मुंबई-400031. **फोन : 022-24122661/43473050, 9833151545. आईएनएस टावर, बांद्रा कुर्ला कौंप्लैक्स, मुंबई-400051. फोन : 022-48264114** ● 11, फर्स्ट क्रौस, बालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, **बेंगलुरु-560051. फोन : 080-42013076** ● 14, पहली मंजिल, सीसंस कौंप्लैक्स, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448** ● 122, पहली मंजिल चिनाय ट्रेड सैंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596** ● जी-7 पायोनियर टावर्स, 1 मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537.** ● 16 ए, अमृता बनर्जी रोड, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा **कोलकाता-700026.** ● 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, **पटना-800001. फोन : 0612-2323840** ● फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ-226001. फोन : 0522218856** ● गीतांजली टावर, शौप नं. 114, (डाक्टर व्यास अस्पताल के सामने) अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** ● बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी 80 फुट रोड, पीछे अशोका गार्डन थाना, **भोपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.**

संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन पीटीई लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा **ई-8**, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित.
संपादक : परेश नाथ.

वार्षिक मूल्य केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
Ph.: 91-41398888, Extn. No. 119,221,264.
(Mon to Sat 10 am to 6 pm)
Mobile/SMS/Whatsapp: **08588843408**
Email : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Private Ltd., New Delhi-110055, INDIA. No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.

मूल्य : एक प्रति 40.00. एक/दो वर्ष : ₹ 522/996. विदेशों में मूल्य : एक प्रति : 0.47 (डाक व्यय अतिरिक्त)

International Subscription Price Air mail Charges		Express Delivery Europe & South America		Express Delivery SAARC Countries		Express Delivery Rest of Countries		*(All the Prices given are in US$)*
1 year	50	1 year	210	1 year	120	1 year	140	
2 year	95	2 year	420	2 year	240	2 year	275	

क्यूआर कोड स्कैन करें

लेख • रोहित

गपोड़िए और पालतू बन कर रह गए इंडियन पोडकास्टर्स

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

भारत में यूट्यूब पर कई पोडकास्टर्स उग आए हैं, जिन का काम बस यहांवहां की गपें हांकना, फेक नैरेटिव और अंधविश्वास फैलाना, एक घंटे व्यूअर्स का समय बरबाद करना आदि रह गया है. ये पोडकास्टर्स गपोड़िए प्रवृत्ति के हैं, जो व्यूज के लिए कुछ भी कर रहे हैं.

यूट्यूब पर पोडकास्ट चलाने वाले इन्फ्लुएंसर्स की संख्या खूब बढ़ रही है. हालत यह है कि इंस्टाग्राम ओपन करते ही इन्हीं की काटी हुई शौर्ट रील्स जबरदस्ती हर दूसरी फीड में आ जाती हैं. इन रील्स में काम का होताजाता कुछ नहीं, बस कैमरे के सामने एक हैडफोन पहने पोडकास्टर कुरसी पर बैठे दिखता है. थोड़ाबहुत पैसा जोड़ लिया हो तो रोड कंपनी का ब्लैक माइक्रोफोन सामने लगा रहता है और ट्रैंडिंग बैकग्राउंड म्यूजिक से बातों को ऐसे सैंसेशनलाइज किया जाता है जैसे इस से जरूरी कुछ और नहीं.

इंडिया में अधिकतर पोडकास्टर्स यूट्यूब पर अपनी गप्पों की दुकान चला रहे हैं. ध्यान से यदि इन के पोडकास्ट सुनें तो समझ आ जाएगा कि ये डिजिटल एरा में ठीक उसी तरह के गपोड़िए हैं जैसे हर रिश्तेदारी में मिर्चमसाला लगा कर यहां से वहां करने वाली कोई न कोई चाचीताई होती है या ये ठीक उसी तरह के गपोड़िए हैं जैसे चौपालों या ड्राइंगरूम में ज्ञान दे रहे शर्मा और वर्मा अंकलों की अधकचरी राजनीतिक और सामाजिक समझ.

माजरा यह है कि पोडकास्ट इन्फ्लुएंसर बनने में लगताजाता कुछ नहीं है. एक छोटे से कमरे में स्टूडियो सैटअप लगाना होता है. दीवारों पर वौइस कैंसिलेशन वाले गद्दे, अगर यह नहीं भी है तो बिस्तर के गद्दे ही जमीन पर बिछा कर काम चल जाता है. पीछे काला परदा, एक एचडी कैमरा (ईएमआई पर खरीदा फोन ही सही), कोई भी ऐसा लैपटौप जिस में एडिटिंग सौफ्टवेयर चल सके काफी है. अगर हल्का बजट ज्यादा है तो ट्राईपोड, कौलर माइक और लाइटिंग किट भी जोड़ लिया जाता है. कुल मिला कर 15–20 हजार लगा कर किसी भी ऐरेगैरे को ज्ञान गपोड़ी बनने का लाइसैंस यूट्यूब दे ही देता है.

यही कारण है कि यूट्यूब पर कचरा परोसने वाले ऐसे ढेरों पोडकास्टर्स उग आए हैं जो न सिर्फ लोगों का घंटों समय बरबाद कर रहे हैं बल्कि ऐसी अधकचरी जानकारियां सोशल मीडिया पर ठेल रहे हैं जिस से झूठ और आलतूफालतू बातें ही यहांवहां फैल रही हैं. उदाहरण के लिए 'रियल टौक क्लिप्स' नाम के एक यूट्यूब चैनल को ही लें.

इस चैनल को 3 लड़के चलाते हैं. इन के पोडकास्ट का पैटर्न इंटरव्यू बेस्ड है. ये ऐसे लोगों का एक्सपर्ट बना कर इंटरव्यू लेते हैं जो अजीबोगरीब मिथकीय बातें करते हैं. इंटरव्यू सिर्फ नाम का है. चुनाव के समय जिस तरह न्यूज चैनल्स पीएम मोदी की जीहुजूरी वाले इंटरव्यू ले रहे थे, इस में भी बस इसी तरह के इंटरव्यूज होते हैं. कोई भी नत्थू खेरा जिसे जाननेसमझने से जानकारी कम और बेड़ा गर्क ही ज्यादा होगा उन लोगों को गैस्ट के तौर पर बैठा लिया जाता है. इन से कोई काउंटर सवाल नहीं होता.

इन तीनों लड़कों का यह चैनल जानकारी देने के नाम पर अंधविश्वास फैलाने का अड्डा बना हुआ है. एक उदाहरण से समझिए, 11 जून को ये ऐसा ही एक 45 मिनट के करीब वीडियो अपलोड करते हैं, जिस में हर्ष गोयल नाम के एक रुद्राक्ष एक्सपर्ट को बुलाते हैं. अब कोई बताए कि रुद्राक्ष पहनने में कब से एक्सपर्टीज आने लगी है? होस्ट अपनी बात स्टार्ट करता है कि यह पोडकास्ट रुद्राक्ष पहनने के नियमों पर है.

इस वीडियो में 'एक्सपर्ट' हर्ष गोयल बताता है कि जो व्यक्ति रुद्राक्ष धारण करता है उसे खुद भगवान शिव नमन करते हैं. यह वह शिव पुराण के 25वें अध्याय के आधार पर बताता है. इस के अलावा वह कहता है कि ''सही समय पर रुद्राक्ष धारण कर लिया जाए तो कैंसर जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है.'' अब ऐसी बातें सुन कर कोई भी समझदार व्यक्ति अपना माथा धुन ले.

अब अगर इन गपोड़ी इन्फ्लुएंसर्स की जगह कोई जिज्ञासु पोडकास्टर होता तो काउंटर में सवाल जरूर पूछता कि रुद्राक्ष में यदि इतनी ही ताकत है तो सरकार से देशभर के सारे सरकारी और प्राइवेट अस्पताल बंद करवा कर घरघर रुद्राक्ष बंटवाने की मुहिम क्यों नहीं शुरू कर देते? जब 200 रूपए के रुद्राक्ष की माला से ही सब कष्ट दूर हो जाते तो हजारों रुपए खर्चने की जरूरत ही क्या है? मगर नहीं, ऐसे भ्रम फैलाना तो इन पोडकास्टर्स का धंधा है.

इस चैनल में यह ऐसी अकेली कचरा वीडियो नहीं है. 2 हफ्ते पहले इसी यूट्यूब

FOR More Newspapers & Madazines https://telegram.me/PaperMadzine

चैनल पर 'लड़की की वजह से अपने ही दोस्त पर किया काला जादू' नाम से एक वीडियो अपलोड किया. इस में गैस्ट के रूप में अक्षय वशिष्ठ नाम को बुलाया गया है. एक तो समझ नहीं आता ये पोडकास्ट वाले कहां से एक से बढ़ कर एक नमूने ढूंढ़ लाते हैं.

अक्षय इस वीडियो में बिना प्रूफ के बस सुनीसुनाई बातों से भूतप्रेत वाला किस्सा सुनाता है, जिस में एक किस्सा, रोहित नाम के यूपी के लड़के का होता है जिसे उस का दोस्त उस की गर्लफ्रैंड के चक्कर में वशीकरण कर लेता है. अक्षय इस वीडियो में लंबीलंबी गप्पें हांक रहा होता है और होस्ट ''ओये... क्या बात है... सच में... ओयेहोए... अच्छा जी'' कहते रहते हैं. इस चैनल पर ऐसी ढेरों वीडियोज हैं जिन पर कायदे से रिपोर्ट की जाए तो चैनल पर ही अंधविश्वास फैलाने के चक्कर में स्ट्राइक पड़ जाए.

'रियल टौक क्लिप्स' के अलावा 'दोस्तकास्ट' नाम का एक यूट्यूब चैनल है. इसे चलाने वाले का नाम विनम्र कसाना है. इस के पोडकास्ट देखें तो इस में मिक्स कंटैंट देखने को मिलता है. इस में यूनियन मिनिस्टर हरदीप पुरी से ले कर पत्रकारिता का फुका कारतूस प्रदीप भंडारी भी दिखने को मिलता है, जिस ने पत्रकार जमात का नाम ही खराब किया है. इस चैनल के अधिकतर एपिसोड एकतरफा मौजूदा सरकार को सपोर्ट करने वाले होते हैं. आजकल बगुलेभक्तों के बीच फेमस हो रहा अक्षत गुप्ता का इंटरव्यू भी इस में दिखता है जिस की रोजीरोटी ही धर्म प्रचार से चलती है.

अगर पौलिटिकल वीडियो से हट कर भी देखा जाए तो रजत दलाल जैसे इंटरनैट माफियाओं को यह अपने शो पर गैस्ट के रूप में बुलाता है, जिस की वीडियो में क्या है, क्यों है कुछ पता नहीं चलता. सवाल पूछे जाते हैं कि मैक्सटर्न और एल्विश की लड़ाई में उस की एंट्री कैसे होती है. जिस पर रजत कहता है, ''एक मैं ने स्टोरी डाली थी जो पिटने के काम करेगा वह पिटेगा. उस पर 74 हजार शेयर्स थे. यह स्टोरी इतनी घूमी कि लगा रजत दलाल इन के झगड़े में एंट्री कर रहा है पर मैं ने दोनों से बात की और बात खत्म की.''

अब कोई भी समझदार बताए कि इन तीनों के झगड़े से आम दर्शकों का क्या लेनादेना और वैसे भी ये कौन सा नैशनल, एजुकेशनल या लोकल इशू है जिसे दर्शकों का जानना बहुत जरूरी है? एल्विश जो युवाओं को नशे करना सिखा रहा है, मैक्सटर्न जो सस्ती पौपुलेरिटी से पैदा हुआ है और रजत दलाल जो लफंगई करता है इन्हें युवा जाने ही क्यों? क्यों इन्हें ही युवाओं के बीच थोपा जा रहा है?

हैरानी यह कि लफंगई करने वालों को यह चैनल खुला स्पेस दे रहा है साथ में उसे यूथ आइकन की तरह प्रैजेंट कर रहा है. इस शो में आए गैस्ट गालीगलौज करते हैं. हिंदी बोलने वाले गाली देते समय जितने भौंडे सुनाई देते हैं इंग्लिश बोलने वाले उस से ज्यादा अश्लील दिखाई देते हैं.

अब एक नजर 'श्याम शर्मा शो' चैनल पर डालें तो यह भी सिर्फ अपने पोडकास्ट पर गप्पें हांकता है. कोई ठोस प्रमाण और वजहें इस के पोडकास्ट में दिखाई नहीं देतीं. इस के ढाई लाख से अधिक सब्सक्राइबर्स हैं. इस के चैनल पर भी घूमफिर कर एक ही तरह के गैस्ट यहां से वहां दिखाई देते हैं. गैस्ट भी सिर्फ कचरा परोस रहे हैं और इन्फ्लुएंसर बस सिर ही हिला रहे हैं.

इस चैनल की भी अधिकतर जानकारियों का सौर्स और एजेंडा भाजपा के दफ्तर से बन कर आए लगते हैं. चैनल का काम एक तरह का नैरेटिव सैट करने का दिखाई देता है, जैसे 'हाउ टू रीक्लैम काशी', 'डार्क रियलिटी औफ मुफल,' 'हाउ जयशंकर ट्रांसफौर्म्ड इंडियन फौरेन पौलिसी', 'फौरेन यूनिवर्सिटी स्प्रैडिंग एंटी हिंदू एजेंडा' वगैरहवगैरह.

यह तो महज कुछ ही उदाहरण हैं. राज शमामी, बीर बाइसैप्स, सुशांत सिन्हा जैसे बड़ेबड़े पोडकास्टर्स हैं जो अपने शो में ऐसेऐसे लोगों को बुलाते हैं जिन्हें एक्सपर्ट कह कर इंट्रोड्यूस किया जाता है. इन इन्फ्लुएंसर्स के पास सैलिब्रिटी तक जाते हैं. वहां जा कर उन की क्या क्वालिफिकेशन, एक्सपर्टीज और एक्सपीरियंस हैं इस पर गोलमोल बातें होती हैं, दर्शकों को एक्सपर्ट के नाम पर धेला कुछ नहीं मिलता. हां, कोई यहांवहां से टुकड़े जोड़ कर, किसी समुदाय, ग्रुप को टारगेट कर दे, कुछ भी एक घंटे तक बकबक कर दे वही एक्सपर्ट बन जाता है. एक्सपर्ट ऐसे दिखाई देते हैं जैसे पनवाड़ी की दुकान पर कोई रहस्यमयी बात बता रहे हों. समस्या यह कि ये पोडकस्टर्स अपने दिए कंटैंट तक को सीरियसली नहीं लेते. इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता कि उन के दर्शकों को यह कितना बुरा इफैक्ट पहुंचा रहे हैं.

भारत में इस समय कई पोडकास्ट चैनल्स हैं. ये चैनल्स बनाए ही इसलिए गए हैं ताकि कुछ न कुछ कंट्रोवर्शियल चीजों पर उलटीसीधी बात बाहर आ जाए. लोगों के बीच हल्ला गरम रहे, आउटपुट के नाम पर इन वीडियोज में से कुछ भी नहीं निकलता. व्यूअर्स अपना समय और पैसा ही बरबाद करते हैं. अगर इस का कोई प्रूफ चाहिए तो सोचिए आम समस्याओं पर ये क्या दिखा रहे हैं? क्या भूतप्रेत जैसी अंधविश्वास की कहानियां सीख देंगी? क्या सरकार के पक्ष में पोडकास्ट बनाना लोगों की समस्याओं को सुलझाएगा? गालीगलौज और किसी भी ऐरेगैरे को अपने चैनल पर बैठा कर बेकाम की बातें किस तरह की इन्फौर्मेशन दे रही हैं? ●

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

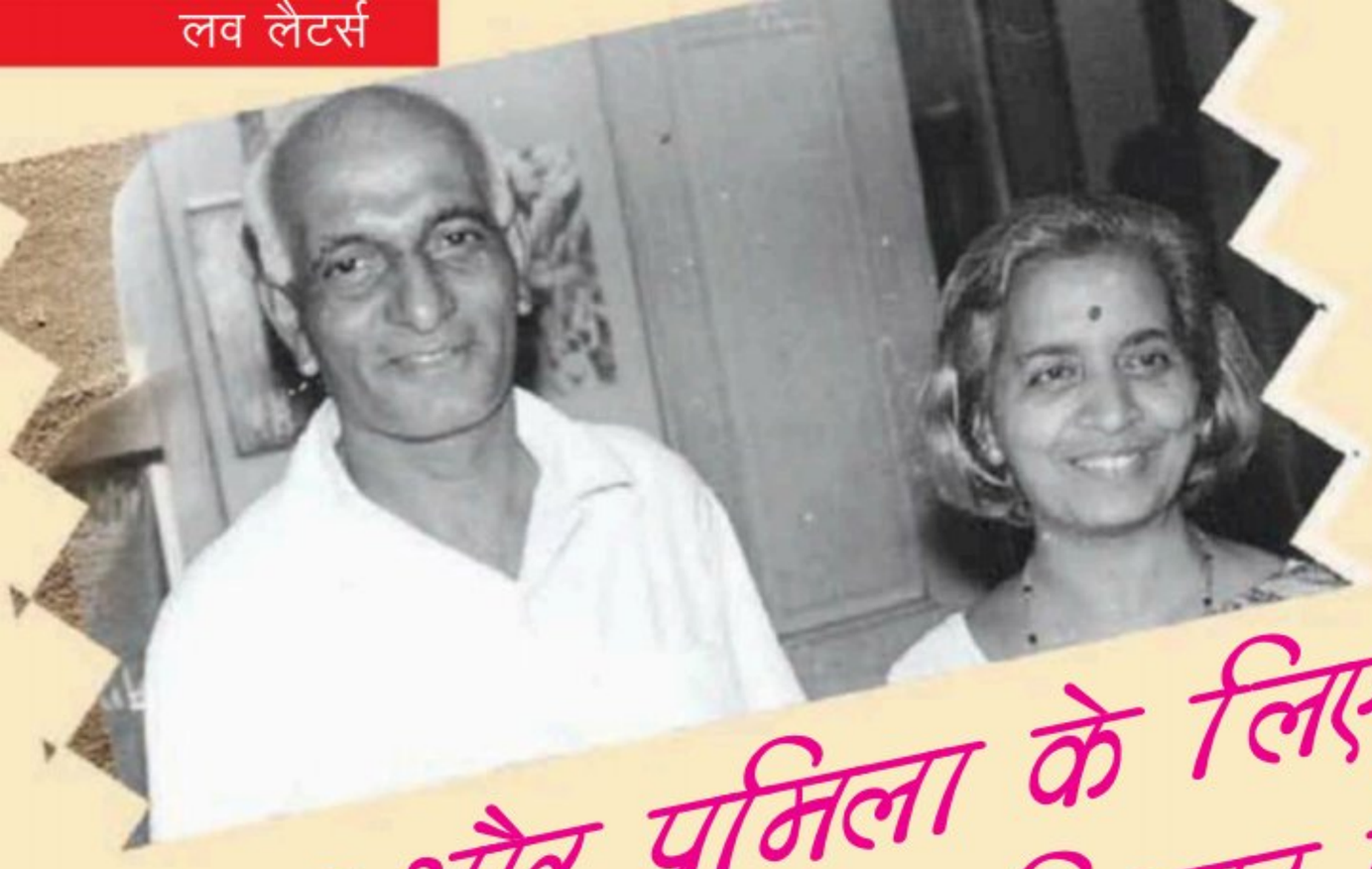

इमरजैंसी के दौर में फ्रीडम फाइटर मधु व उन की पत्नी को भी जेल में डाला गया. इस बीच दोनों ने एकदूसरे को 200 खत लिखे जो इमरजैंसी का प्रतिकार प्रेम बना.

मधु और प्रमिला के लिए इमरजैंसी का प्रतिकार प्रेम

बात 26 जून, 1975 की है. देश पर आपातकाल थोप दिया गया था. इंदिरा गांधी सुप्रीम लीडर थीं. तमाम विरोधी दलों के नेता जेलों में बंद थे. उस इमरजैंसी का विरोध सोशलिस्ट लीडर मधु दंडवते और उन की पत्नी प्रमिला दंडवते ने भी किया था, जिस का अंजाम यह हुआ कि उन्हें आपातकाल खत्म होने तक जेल हुई. मधु को बेंगलुरु सैंट्रल जेल में और लगभग 900 किलोमीटर दूर प्रमिला को यरवदा सैंट्रल जेल में बंद किया गया.

सवाल यह कि इंसानों को कैद किया जा सकता है पर क्या प्रेम को कैद किया जा सकता है? इस का जवाब उन दोनों के पत्रव्यवहार ने दिया जो न तो इन के बीच की दूरी की बाधा बना या न निराशा का कारण. बल्कि इस मुश्किल समय में उन दोनों का प्रेम एकदूसरे के लिए और भी गहरा होता गया.

कैद के दौरान मधु और प्रमिला ने एकदूसरे को लगभग 200 लैटर्स लिखे. एक विचारधारा से आने वाले इस कपल ने इन लैटर्स में एकदूसरे से संगीत, पुस्तकों, कविता और फिलौसफी पर चर्चा की. यही नहीं, उन्होंने इस सवाल से भी निबटने की कोशिश की कि क्या आजादी के बिना प्रेम संभव है?

एजुकेशनिस्ट ज्ञान प्रकाश ने 'इमरजैंसी क्रौनिकल्स : इंदिरा गांधी एंड डैमोक्रेसीज टर्निंग पौइंट' में मधु और प्रमिला के लैटर्स पर स्टडी की. उन्होंने अपने कनक्लूजन में लिखा, ''दोनों के बीच हुए लैटर्स कम्युनिकेशन प्रेम के दर्द को बयां करते हैं और साथ ही, उन्होंने फ्रीडम को ले कर अपने कमिटमैंट को प्रेम के इमोशनल बौंड से दिखाने का काम किया. वे एकदूसरे से प्यार करते थे क्योंकि वे आजादी से प्यार करते थे. उन के प्रेम ने आजादी के अर्थ को भी मजबूत और विस्तार दिया.''

मधु और प्रमिला की शादी 1953 में हुई. इमरजैंसी के हालात में भी वे टूटे नहीं बल्कि एकदूसरे के साथ रहने के लिए उत्साहित थे. जेल और सेपरेशन ने दोनों के प्रेम को और बढ़ा दिया. प्रमिला ने मधु को एक पत्र में लिखा, ''क्या तुम ने जीवन में पहले कभी मुझे इतने नियमित रूप से लैटर लिखे हैं?'' वे आगे कहती हैं, ''मुझे याद है आप लंबे दौरों पर चले जाते थे और महीनों तक नहीं लिखते थे. जब कोई आप के बारे में पूछता था तो मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस होती थी. मेरे पास उन्हें बताने के लिए कुछ नहीं होता था. लेकिन अब हमें देखो... आप बिना किसी समस्या के मुझे हर सोमवार को लिखते हैं. आपातकाल को धन्यवाद.'' यह वार्त्तालाप बताता है कि दोनों अपने प्रेम को इमरजैंसी में एंजौय कर रहे थे. वे अपने लैटर से जता गए कि इमरजैंसी का प्रतिकार प्रेम ही था.

जिस दौरान वे जेल में बंद थे उस दौरान उन का इकलौता बेटा उदय देश के प्रेस्टीजियस इंस्टिट्यूट 'नैशनल इंस्टिट्यूट औफ डिजाइन' में पढ़ रहा था. प्रमिला ने अपने पत्रों में अपने बेटे के लिए चिंता भी जताई. उन्होंने एक पत्र में लिखा, ''हम अपने के लिए कुछ नहीं कर सकते. हम ने उस में अपने मूल्यों को विकसित करने का प्रयास किया लेकिन इस से पहले कि वह पूरी तरह से तैयार होता, उस के पंखों में ताकत आती, हम ने उसे छोड़ दिया, उसे खुद की देखभाल करने, अपना जीवन बनाने के लिए छोड़ दिया.'' प्रमिला ने अपने एक पत्र में लिखा, ''उस के मातापिता जीवित हैं मगर वह एक अनाथ की तरह है.''

इमरजैंसी के इन मुश्किल पलों में जबजब कोई नाउम्मीदी और निराशा से भरता, दोनों में से कोई न कोई एकदूसरे का सहारा बन ही जाता. जेल से निकलने के बाद नाउम्मीदों से भरी जिंदगी को ले कर प्रमिला की चिंताओं को ले कर मधु कहते हैं, ''तुम्हारे आखिरी पत्र पर दुख की छाया थी. तुम ने कहा था कि 'जब तक हम यहां से निकलेंगे तब तक हमारा घर और जीवन एकसाथ पूरी तरह नष्ट हो जाएंगे और आप नहीं जानते कि आप के पास यह सब दोबारा करने की ताकत और दृढ़ता है या नहीं.' तुम्हारी टिप्पणी मुझे बेहद निराशाजनक लगी. हम ने हमेशा अपने जीवन को एकसाथ अपनी पीठ पर ढोया है. जब तक हमारी रीढ़ अपनी जगह पर है, कौन हमारे जीवन को एकसाथ छू सकता है?''

यह प्रेम का जरूरी पहलू है कि आप बुरे समय में एकसाथ खड़े रहते हैं. डिजिटल एरा में 'प्रेम क्या है' यह आज के युवा कितना बेहतर जानतेसमझते हैं, यह पता नहीं, मगर एक बात पक्की है कि वे मधु और प्रमिला दंडवते की तरह अपनी भावनाओं को एक्सप्रैस करने के लिए एसी कमरों में चार शब्द नहीं लिख सकते.

व्हाट्सऐप पर घंटों चैटिंग करने वाले युवा कपल्स मुमकिन है कि 'प्रेम क्या है' के जवाब में शारीरिक वासना और स्टेटस पाने का जरिया ही प्रेम बताएं पर डिजिटल एरा से पहले इस सवाल के कईयों के सुंदर जवाब दिए जा चुके हैं.

हालांकि प्रेम की कोई सीमित परिभाषा नहीं, कोई एक परिभाषा नहीं हो सकती, इस के बावजूद तमाम प्रेमगाथाओं से एक मुकम्मल जवाब आखिरकार यही समझ आता है कि प्रेम इंसान को बेहतर बनाता है. लालच, डर, नफरत से आजाद करता है, त्याग और साहस सिखाता है.

फिर भी सवाल उठता है कि आजादी के बिना प्रेम क्या है? क्या कोई पहरा प्रेम को रोक सकता है? इसे फ्रीडम फाइटर रहे मधु दंडवते और प्रमिला के 18 महीने लंबे चले उस टाइम पीरियड से समझा जा सकता है जिन्होंने बताया कि इंसान भले जंजीरों में बंधा हो मगर प्रेम को जंजीरों में नहीं बांधा जा सकता. **–प्रतिनिधि** ●

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagazine

मुक्त विचार

संपादकीय

रील्स पर थिरकती युवतियां

सोशल मीडिया ऐसी रील्स से भरा हुआ है जिन में कोई युवती भरे बाजार में या घर के कमरे में थिरकती, किसी धुन पर नाचती दिख रही होती है. इन रील्स के लाखों फौलोअर्स भी हैं और इन के बनाने वालियों को कभीकभार कुछ आमदनी भी हो जाती है. आमतौर पर ये अपने फौलोअर्स और अपनी रील्स के बारे में प्रसारित होती न्यूज देख/सुन कर खुश होती रहती हैं.

ये यह भूल रही हैं कि अब इंफ्लुएंसर्स सोशल मीडिया प्लेटफौर्म्स के लिए पपेट बन कर रह गए हैं. ये प्लेटफौर्म्स इतना हाईटैक हैं कि रातोंरात किसी भी इंफ्लुएंसर को ये कितना ही चढ़ा दें और फिर जब चाहें कितना ही गिरा भी दें. ये ऐसा क्यों करेंगे? ऐसा ये इसलिए करेंगे क्योंकि इन का मतलब तो व्यूअर्स को उलझाए रखना है जिन्हें ये अपने एड दिखा सकें. ये न्यूट्रल प्लेटफौर्म्स नहीं हैं जहां हर कोई आ कर अपना नाम कमा सके.

हर प्लेटफौर्म आज एक बड़ी कंपनी का है, बेहद बड़ी कंपनी का जो बिलियन डौलरों में खेलती है और उस की न नाचगाने में रुचि है, न फ्रीडम औफ स्पीच में या किसी तरह के कल्चर के प्रमोशन में. इन प्लेटफार्मों में कुछ देशों में, जहां सरकारों के नियम ढीले हैं, बेहद इरोटिक कंटैंट भी डाला जा रहा है ताकि कमाऊ सेना जुड़ी रहे और बीचबीच में आने वाले एड्स के चलते खरीदारी भी करती रहे.

इन प्लेटफौर्म्स ने यूजर्स की माइंड कंडीशनिंग उस तरह की कर दी है जैसे सदियों से धर्म ने कर रखी थी. हर धर्म दिन में दस बार अपने किसी देवीदेवता का नाम अपने भक्त से कहलवाता है, हर अच्छेबुरे वक्त में उसे याद करने को कहता है. अच्छा हो जाए, तो वह भक्त को चढ़ावे के लिए उकसाता है. बुरा हो रहा हो तो कहता है कि उस धर्म के भगवान, गुरु, देवी, देवता को याद करो, उस की दुकान पर जाओ, प्रेयर करो, कुछ दान दो. सब ठीक हो जाएगा. सदियों से ठीक तो कम हुआ पर लोगों ने जरा सी मानसिक सैटिस्फैक्शन के लिए न केवल दूसरे धर्म वालों के गले काटे बल्कि अपनी लाइफ धर्म के दिए बंधनों में बांध भी दी. इन बंधनों की घरों में सब से बड़ी शिकार औरतों को बनाया गया. रेप होने पर उन्हें ही दोषी ठहराया गया, बच्चे न होने पर वे ही गिल्टी ठहरीं, उन्हें ही कभी चुड़ैल कहा गया, कभी पापिन, कभी पति को खा जाने वाली तो कभी समाज के लिए कलंक.

सोशल मीडिया प्लेटफौर्म्स भी यही कर रहे हैं. ये लड़कियां, जो 10–20 सैकंड का नाम दिखाने के लिए घंटों बरबाद कर रही हैं, अपना फ्यूचर मिट्टी में मिला रही हैं. इस का ब्लेम कभी उस सोशल मीडिया को नहीं जाएगा जिस ने मुफ्त में यह शराब पिलाई. सोशल मीडिया ने क्रिएटिविटी को 10–20 सैकंड तक लिमिट कर दिया है. एक तरफ, अनएडिटेड मैटीरियल इस कदर डाल दिया गया है कि इस पर सचझूठ, अच्छाबुरा, नुकसानदेयलाभदायक छांटना किसी के लिए भी मुश्किल है.

सोशल मीडिया ने वह काम किया जो एक धर्म का प्रचारक सीधेसादे गांव वालों के साथ 200 वर्ष पहले करता था. उन्हें झूठी कहानियां सुनाता, झूठे दिलासे दिलाता, कुछ को पटा कर अपने में मिला कर राजसी ठाटबाट दिला देता और फिर दूसरों को अट्रैक्ट करता.

सोशल मीडिया के पैसे से ही पनप रही आर्टीफिशियल इंटैलिजैंस आज ह्यूमैनिटी के लिए एक नया चैलेंज है. आज इस में सोशल मीडिया का पैसा लग रहा है, कल आर्टिफिशियल इंटैलिजैंस को चलाने वाले पोप, शंकराचार्य मुल्ला धर्मगुरु बन जाएंगे. इस की जड़ में वे बेवकूफ लड़कियां हैं जो 10–15 सैकंड को अपना फ्यूचर मान रही हैं.

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

धर्म का व्यापक व्यापार

सरकार के ढीली पड़ते ही मोदीभक्तों के चैनलों, समाचारपत्रों और यूट्यूबों के तेवर ढीले होने लगे हैं और चैनलों, समाचारपत्रों व पत्रिकाओं में सच वाली खबरें प्रकाशित की जाने लगी हैं. उत्तर प्रदेश के एक हिंदी समाचारपत्र, जिसे कभी मोदी सरकार की कोई गलती दिखती ही नहीं थी, ने 10 जून को बौक्स में एक न्यूज आइटम प्रकाशित कर डाला कि विश्व की सब से तेज दौड़ती अर्थव्यवस्था का नारा लगाने वाली सरकार की असलीयत यह है कि मानव विकास सूचकांक– ह्यूमन डैवलपमैंट इंडैक्स– में भारत 193 देशों में 134वें स्थान पर ही है, इसे पश्चिमी देशों के स्तर पर पहुंचने में लंबा समय लगेगा.

इसी बौक्स में अखबार ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि जहां प्रतिव्यक्ति आय में यूरोप का छोटा सा देश लक्जमबर्ग की प्रतिव्यक्ति आय 1,40,312 डौलर, नार्वे की 1,02, 733 डौलर, अमेरिका की 83,060 डौलर और एशिया के देश सिंगापुर की 91,733 डौलर है वहां भारत में प्रतिव्यक्ति आय केवल 2,673 डौलर है.

जैंडर इनइक्वैलिटी इंडैक्स यानी लैंगिक असमानता सूचकांक में भारत 166 देशों में 108वें स्थान पर है.

आमतौर पर ये समाचारपत्र, पत्रिकाएं और चैनल केवल यही समाचार बताते हैं कि कहां किस मसजिद में भोंपू लगे हैं और किस नकली मुसलिम ने हिंदू बन कर लड़की को फांसा. ये मंदिरों में होने वाली सारी आरतियां, कलशयात्राओं का पूरा वर्णन करते हैं पर नौकरियों के लिए मारेमारे फिर रहे छात्रों की बात नहीं करते क्योंकि बेरोजगारों की बात करने से मोदी के वोटबैंक पर असर पड़ता.

अब हार कर इन्हें अपना संतुलन बनाना पड़ रहा है. पर यह समझ लें कि हमारा मीडिया इतना बिकाऊ नहीं है जितना भक्त हैं. ये लोग पारंपरिक संस्कारों, पूजापाठों, स्वामियों, मठों, आश्रमों आदि के भक्त हैं और पूजापाठ को प्रगति का एकमात्र सहारा मानते हैं.

देश के हर मीडिया संचालक को अपने मन की बात कहने का पूरा हक है और इस पर आपत्ति नहीं होनी चाहिए. सवाल तो उन नेताओं और पाठकों से किया जाना चाहिए जिन्होंने अपनी मूर्खता के चलते धर्म के पाठ को वैज्ञानिक युग में सफलता, सुख व समृद्धि की चाबी मान लिया. ठीक है कि धर्मप्रचार पर जितनी मेहनत धर्म के दुकानदार करते हैं उस का अंशभर भी तार्किक, वैज्ञानिक और तथ्यात्मक सोच वाले नहीं करते.

जो भक्त नहीं हैं उन के लिए हिंदी में शब्द है नास्तिक यानी जो सत्य को न माने, जबकि, नास्तिक केवल सत्य में विश्वास रखता है कपोलकल्पित बातों में नहीं कि किसी क्षीर सागर में कोई जना सांप पर लेट कर सृष्टि को चला रहा है. ये चैनल, समाचारपत्र, पत्रिकाएं, यूट्यूबर्स, सोशल मीडिया वीर मोदी को लगी चोट से थोड़े तिलमिलाएंगे पर 2004 के बाद जैसे एक बहुत कट्टर हिंदुत्व पनपा जिस का परिणाम था 2014 के चुनाव से निकली 10 साल की लगभग आतंकी सरकार को भोगना, वैसा ही कुछ अब किया जा सकता है.

धर्मयुद्ध एक मुठभेड़ में तय नहीं हुआ करते. कट्टरपंथी मंदिरों, मठों, आश्रमों, वर्णव्यवस्था, धर्म के व्यापक व्यापार को ऐसे ही हाथों से फिसलने जाने नहीं देने वाले. ये मीडिया वाले चार दिन संतुलित रहेंगे, फिर किसी और नाम से शुरू हो जाएंगे. ●

लेख • चंद्रकला

पुणे कार क्रैश नाबालिग से ज्यादा मांबाप जिम्मेदार

पुणे पोर्श कार
क्रैश मामला सबक है
उन टीनएजर्स के मांबाप के लिए
जो अपने बच्चों को गैरजिम्मेदार बना कर
उन की जान तो खतरे में डाल रहे हैं, दूसरों की
जिंदगी से खिलवाड़ भी कर रहे हैं.

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

पुणे पोर्श कार केस चुनाव के नतीजों से पहले सब की जबां पर था, जिस में 17 साल के युवक ने एक लग्जरी और महंगी पोर्श कार से 2 टैकीज की जान ले ली. बिना लाइसैंस, बिना नंबरप्लेट और नशे में कार को चला रहा युवक अपनी बर्थडे पार्टी से वापस आ रहा था जब उस ने ड्राइवर से ले कर कार चलानी शुरू की और नशे में 2 लोगों को अपना शिकार बनाया.

ऐक्सिडैंट्स की घटनाएं संकरी सड़कों और रैडलाइट की अनदेखी के कारण भारतीय सड़कों पर आम होती जा रही हैं जिन पर लगाम न तो ट्रैफिक पुलिस और न ही कानून व्यवस्था लगा पा रही है. बहरहाल यह दुर्घटना फिलहाल सब की जबां पर है जिस में कई चौंका देने वाले तथ्य सामने आए. सब से ज्यादा जो चौंका देने वाली बात देखी गई वह थी मांबाप की भूमिका.

इस बात का जिक्र अजित पवार ने भी किया. महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने पुणे कार दुर्घटना में कथित रूप से शामिल नाबालिग के मातापिता को जिम्मेदार बताया. उन का कहना था कि उन्होंने उस के चालचलन को अनदेखा किया, जिस के कारण ही 2 युवा सौफ्टवेयर इंजीनियरों की मौत हो गई.

क्या था मामला

20 मई की रात पुणे, महाराष्ट्र में बिल्डर विशाल अग्रवाल के नाबालिग बेटे ने अपनी बर्थडे पार्टी को एंजौय करने के दौरान वहां शराब पी. शराब के नशे में अपनी लग्जरी गाड़ी पोर्श को तेज रफ्तार से सड़क पर दौड़ाते हुए उस ने 2 लोगों की जान ले ली. रोड ऐक्सिडैंट के इस मामले ने इसलिए तूल पकड़ लिया क्योंकि सीरियस हादसे के बाद सिर्फ 15 घंटे के अंदर आरोपी को बेल मिल गई और जिस तरह बेल मिली वह कोई फिल्मी सीन से कम न था.

अपराधी को 300 शब्दों का रोड ऐक्सिडैंट पर एक निबंध (लेख) लिखने, ट्रैफिक पुलिस के साथ 15 दिन काम करने और ड्रिंकिंग छोड़ने के लिए काउंसलिंग की शर्तों पर बेल दे दी गई क्योंकि गाड़ी को चलाने वाला एक रईस खानदान से बिलौंग करता था और ऐक्सिडैंट के शिकार होने वाले मिडिल क्लास से.

धीरेधीरे मामले ने तूल पकड़ा और एकएक कर के परिवार के सभी सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया. शुरुआत में सभी सुबूतों और गवाहों को दबाने की कोशिश की गई लेकिन मामला मीडिया में उछला तो पुलिस और प्रशासन को कड़ी कार्यवाही करनी पड़ी. बच्चे को बचाने के लिए केस को गुमराह

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

करने पर मांबाप की परवरिश पर सवाल उठाए गए, जिस ने लोगों को इस बात पर सोचने को मजबूर कर दिया कि इस तरह से युवा बच्चों का भविष्य बिगाड़ देना मांबाप के लिए कहां तक सही है.

मांबाप की भूमिका

17 साल के टीनएज लड़के को पोर्श जैसी कार बिना लाइसैंस के देना और उसे दारू पार्टी के लिए खुला छोड़ देना, उस के

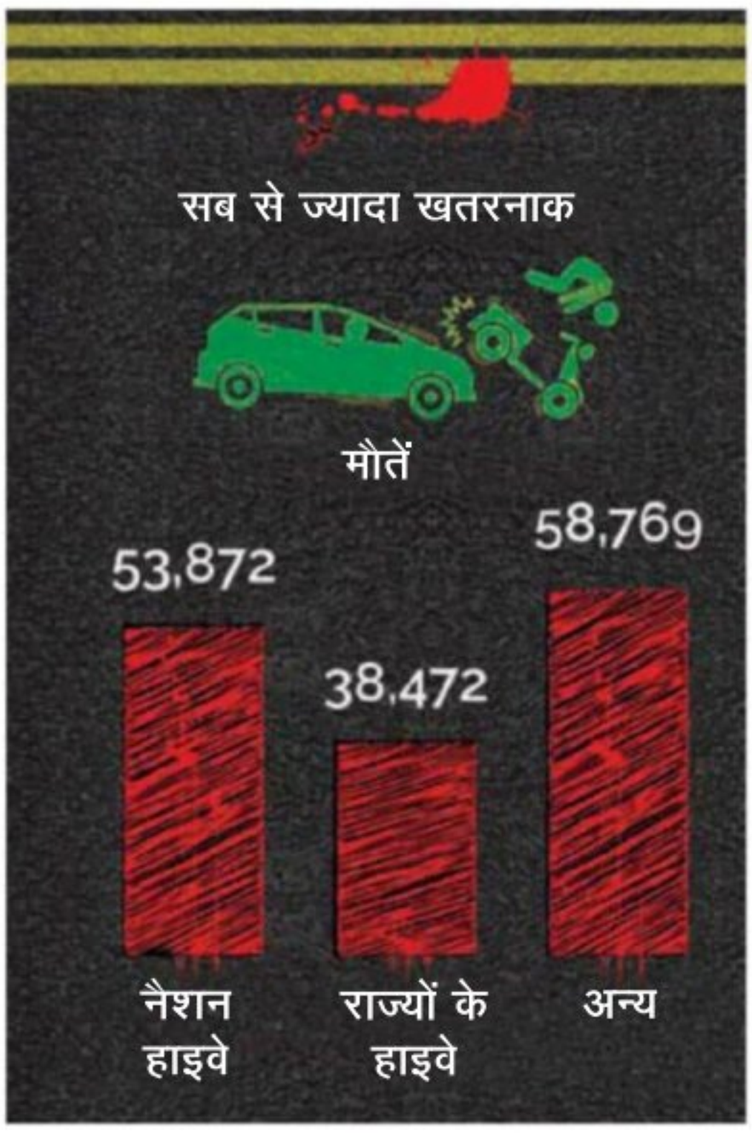

बाद ऐक्सिडैंट केस को निबटाने की कोशिश करना इस केस में मांबाप की भूमिका पर बड़े सवाल खड़े करता है.

आजकल मांबाप बच्चों को जरूरत से ज्यादा पैम्पर करने लगे हैं. उन की हर बात मान लेना उन की गलतियों को नजरअंदाज करते हुए चले जाना आदि कितनी ही बार बच्चों को जिद्दी बना देता है. मांबाप की ये हरकतें ऐसी ही दुर्घटनाओं को न्योता देती हैं. 17 साल जैसी उम्र में बच्चों को ऐसी गाड़ी देना, जो उन्हें बेपरवाह रफ्तार में झोंक सकती है, लापरवाह बना सकती है, मांबाप की बड़ी गलती है.

पुणे के इस केस में नाबालिग के दादा ने बिना लाइसैंस बनवाए उसे कार गिफ्ट की और पेरैंट्स ने उसे चलाने की परमिशन दे दी. यह उस युवा बच्चे के भविष्य से खिलवाड़ नहीं था तो क्या था? इस केस में जितना जिम्मेदार वह युवक था उस से कहीं ज्यादा जिम्मेदार थे उस के मातापिता.

आजकल देखा जाता है कि सड़कों पर कभी जरूरत के चलते तो कभी अपने स्टेटस सिंबल के चलते मांबाप बच्चों को वक्त से पहले ही ऐसी लग्जरी चीजें दे देते हैं जिन से न सिर्फ बच्चे की आदतें खराब होती हैं बल्कि दूसरों को वह नुकसान भी पहुंचा सकता है. पोर्श कार का मामला सीधासीधा यही है.

ऐसा नहीं है कि यह अमीरों में ही देखने को मिलता है बल्कि मिडिल क्लास में भी मांबाप बच्चों को टीनएज उम्र में ही बाइक या स्कूटी थमा देते हैं. ये मस्तीमस्ती में तेज बाइक चलाते हैं और राह चलते लोगों का एक्सिडैंट कर बैठते हैं.

यह बात समझना कितना मुश्किल है कि बच्चों को इस तरह से बिना मैच्योर हुए गाड़ियां दे देना सिर्फ उन की ही नहीं बल्कि सड़क पर चल रहे दूसरे लोगों की जान के खतरे का कारण भी बन सकता है.

क्या कहता है डाटा

पीआईबी की 2022 की ऐनुअल रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 1,68,491 लोगों की मौत हुई. बताया जाता है कि वैश्विक स्तर में रोड पर होने वाली मौतों में भारत में अकेले 11 प्रतिशत मौतें होती हैं. वैश्विक स्तर पर हर साल लगभग 13 लाख मौतें होती हैं. और हर दिन का लगाएं तो 3,200 लोगों की मौत होती है. 5 से 29 वर्ष की आयु के युवाओं और बच्चों में मृत्यु का सब से बड़ा कारण रोड ऐक्सिडैंट्स हैं.

जिस टीनएज उम्र में पढ़ाई करना, कैरियर पर ध्यान देना जरूरी होता है उस उम्र में यदि मांबाप बच्चों को ऐयाशियों में धकेल देंगे तो परिणाम ऐसे ही आएंगे. इस उम्र में रफ्तार थ्रिल देती है, लेकिन जान भी ले लेती है इस की समझ टीनएजर को नहीं होती. इस के लिए मांबाप ही दोषी हैं. ●

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

मेरी बेटी 18 साल की है. उस का बौयफ्रैंड न तो कोई काम करता है, न ही पढ़ाई. उसे बस अपनी बाइक और दोस्तों की परवा है. बेटी उस के प्यार में पागल है, कहती है कि वह पैसे इकट्ठे कर रहा है अपनी गैराज खोलने के लिए, इस में उस के चाचा उस की मदद कर रहे हैं. मैं बेटी को कैसे समझाऊं कि वह गलत लड़के को डेट कर रही है.

इस मामले में आप को अपनी बेटी से खुल कर बात करनी होगी. उसे बताएं कि आप उस से प्यार करते हैं और उस की चिंता करते हैं. उस की भलाई किस में है, अच्छी तरह समझते हैं.

अपनी ही बात नहीं, बेटी को भी अपनी पूरी बात साझा करने दें. बौयफ्रैंड ने उसे अपने भविष्य की क्या प्लानिंग बताई है, पूरी जानकारी लें. बेटी को इस बात पर सोचने के लिए लिए प्रोत्साहित करें कि वह अपने बौयफ्रैंड के साथ रिश्ते में क्या चाहती है. क्या वह उस की इच्छाएं, सपने पूरे करने में सक्षम है भी या नहीं. उसे समझाएं कोई भी फैसला जल्दबाजी में न ले. अपने रिश्ते को टाइम दे और अपने और बेटी के भविष्य के लिए कितना सीरियस है. बेटी को इस बात पर गौर करने के लिए कहे.

आप की बेटी एडल्ट है. उसे अपने फैसले लेने का पूरा अधिकार है. आप चाहें तो एक बार उस के बौयफ्रैंड से मिल कर बात करें. कई बार आमनेसामने बात करने से कई पक्ष सामने आते हैं. हो सकता है वह लड़का वाकई गैराज खोल कर कमाई करना चाहता हो. इस मामले में पूरी छानबीन करनी जरूरी है.

अगर आप को लगता है कि स्थिति को अकेले संभालना बहुत मुश्किल हो रहा है और आप की बेटी समझ नहीं पा रही है या आप उसे समझा नहीं पा रहे हैं ऐसे में आप किसी काउंसलर से सलाह लें और अगर आप किसी परिवार के बड़े या परामर्शदाता की मदद लेने पर विचार करें. बेटी को इस बात के लिए जरूर तैयार करने की कोशिश करें कि वह कोई भी फैसला जल्दबाजी और इमोशन में बह कर न ले. जल्दबाजी में लिए गए कदम आप के भविष्य को बिगाड़ भी सकते हैं.

बौयफ्रैंड से डेट करते हुए मुझे डेढ़ साल होने वाले हैं. मैं उसे पूरे दिल से चाहती हूं लेकिन कई बार वह ऐसी बातें बोलता है कि मुझे लगता है कि वह मुझे ले कर सीरियस नहीं है. कैसे पता लगाऊं कि वह भी मुझ से सच्चा प्यार करता है?

वैसे तो सामने वाला व्यक्ति आप से प्यार करता है या नहीं, आप के साथ उस का किया जाने वाला व्यवहार सब बता देता है. लेकिन कई बार हम पूरी तरह से समझ नहीं पाते हैं लेकिन फिर भी आप कन्फ्यूज्ड हैं तो आप

ध्यान दें कि जब आप अपनी फीलिंग उस के साथ शेयर करती हैं तब क्या वह आप की बातों को ध्यान से सुनता है? समयसमय पर आप को अपने प्यार का एहसास करवाता है? सच्चा पार्टनर आप की खुशी में खुश होता है, इसे सैलिब्रेट करता है और दुख में आप को हिम्मत देता है.

अगर आप का बौयफ्रैंड आप के नाराज होने पर उदास हो जाता है, आप को मनाने की कोशिश करता है तो इस का मतलब है कि वह आप से बहुत प्यार करता है. अगर उसे फर्क नहीं पड़ता तो यह सच्चे प्यार का संकेत नहीं. आप का बौयफ्रैंड आप के मन की बात समझ लेता है तो इस का मतलब है वह आप को अच्छे से जानता है. आप से प्यार करता है, आप की भावनाओं को समझता है.

अगर आप का पार्टनर आप के साथ भविष्य देख रहा है, आप से भविष्य की बातें करता है तो इस का मतलब है वह आप के लिए सीरियस है. वह आप के साथ अपना जीवन जीना चाहता है. लेकिन अगर हिचकिचाता है, भविष्य को ज्यादा अहमियत नहीं देता है तो यह सच्चे प्यार का संकेत नहीं, क्योंकि जब हम किसी से प्यार करते हैं तो उस के साथ आगे के जीवन की प्लानिंग करना पसंद करते हैं. अब आप सब बातों पर गौर कीजिए कि आप का बौयफ्रैंड कैसा व्यवहार करता है. सब देखपरख व सोचसमझ कर फैसला लीजिए.

मेरी और गर्लफ्रैंड की उम्र में 8 साल का अंतर है. मेरे बच्चे अभी बहुत छोटे हैं जबकि गर्लफ्रैंड के बच्चे बड़े हैं. मैं तलाकशुदा हूं और गर्लफ्रैंड सिंगल मदर है. हम दोनों मिलते हैं. बातें शेयर करते हैं. फिजिकल रिलेशन अभी नहीं बने हैं. मैं सोचता हूं कि क्या हमारे इस रिलेशनशिप का कोई भविष्य होगा?

आप ने अपनी दोनों की उम्र नहीं बताई है. खैर, गर्लफ्रैंड के बच्चे बड़े हैं तो आप से वह शायद उम्र में बड़ी है और आप छोटे. आप दोनों की अपनीअपनी पारिवारिक जिम्मेदारियां हैं, जिन्हें आप दोनों बखूबी निभा रहे हैं. जहां तक लगता है आप दोनों ने अपने रिलेशन की बात किसी को नहीं बताई है. आप दोनों ने अपना रिश्ता अपने दोनों तक सीमित रखा है. आपस में मिलतेजुलते, बातें शेयर करते हैं जो आप दोनों को मैंटल सैटिस्फैक्शन देता है. फिजिकल रिलेशन भी बनाने में आप रिश्ते को ले कर अनश्योर हैं तो आप दोनों ही के लिए यह बेहतर होगा कि आप दोनों इस रिश्ते को वक्त दें.

धीरेधीरे अपनेआप को और एकदूसरे को अपने परिवार से मिलाने का प्रयास करें. लेकिन यह प्रयास तभी हो जब आप एकदूसरे के लिए अपनी भावनाओं पर श्योर हों. रही बात उम्र की, तो आप दोनों की उम्र में बहुत ज्यादा फर्क हो ऐसा वर्तमान परिवेश को देख कर लगता नहीं है, रिलेशनशिप में दोनों का तैयार होना भर ही काफी होता है.

इसलिए उम्र को ज्यादा इंपौर्टैंस न देते हुए अपने रिश्ते पर ध्यान दें. फैसले लेने की जल्दबाजी अकसर रिश्तों को खत्म कर देती है. तो अच्छा यही होगा कि रिश्ते को टाइम दें. ●

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

SMS/WHATSAPP +918527666772

आप अपनी प्रेम समस्याएं, संपादकीय विभाग, मुक्ता, दिल्ली प्रैस भवन, **ई–8,** रानी झांसी मार्ग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली–110055 पर भेजें. SMS/Whatsapp से भी भेज सकते हैं. ईमेल द्वारा mukta@delhipress.in पर भेजें. नाम गुप्त रखा जाएगा.

देहाती रील्स क्यों होती हैं वायरल

देहाती रील्स खूब बनाई जा रही हैं. इन रील्स में ईंट, मिट्टी, गारे के कच्चे मकान दिखाई देते हैं. इन्हें बनाने वाले अधिकतर गरीब लोग हैं. इन की चाह तो है कि जल्दी नाम और शोहरत मिल जाए लेकिन शहरी इन्फ्लुएंसर्स के लाखों के तामझाम के आगे क्या ये ज्यादा समय तक टिक पाएंगे?

इंस्टाग्राम स्क्रोल करते हुए मेरी नजर एक रील पर गई. रील का टाइटल था 'देहाती लड़की बनी मैम.' 90 सैकंड की इस रील में एक लड़की के कैरियर का सफर दिखाया गया था. रील में दिखाया गया कि 20–22 साल की एक लड़की दिनरात पढ़ाई कर रही है. घर में बिजली नहीं है तो वह बैटरी वाला लैंप जला कर पढ़ रही है, घर के काम कर रही है. सड़क के किनारे सामान बेचते हुए भी पढ़ाई कर रही है. कोचिंग के पैसे नहीं हैं, फिर भी वह हिम्मत नहीं छोड़ रही है और ऐसे ही पढ़तेपढ़ते एक दिन वह कलैक्टर बन गई.

जैसा कि रील के टाइटल से पता चल रहा है कि यह रील देहात की है, इसलिए रील में दिखाया गया घर भी कच्चा है. जिस में घर की ईंटें साफ दिख रही हैं, पेंट तो छोड़ो, ईंटों पर प्लास्टर भी नहीं है. रील के अलगअलग सीन में घर का सामान इधरउधर पड़ा है. घर का आंगन भी कच्चा है. आंगन को मिट्टी से लेपा गया है. पास ही में एक गाय और बछड़ा बंधा हुआ है, जिन के सामने चारा रखा हुआ है.

कहने का अर्थ यह है कि पूरी की पूरी रील देहाती जीवनशैली को दिखाती है. इस रील पर 22 हजार लोगों ने लाइक, 4 हजार लोगों ने शेयर और करीब 900 लोगों ने कमैंट किए थे. देहात की रील होने पर भी इतनी बड़ी संख्या में इस को देखना हैरान कर

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

#1
Posts
Follow
khortha_dehati_reels_143
Posts
Follow
up_reels_
Posts
Follow
Pov : you are big भगत of shri ram
Posts
Follow

पत्थर की चक्की में
पीसा हुआ आटा
जो दे बेहतर क्वालिटी और
मुलायम रोटियां
100% आटा
0% मैदा
6 घंटे तक मुलायम

देने वाली बात है. इस का अर्थ यह हुआ कि देहाती रील्स को बड़ी मात्रा में देखा जा रहा है, तभी तो ये इतनी ज्यादा दिखाई देती हैं.

अब तक जो रील्स वायरल होती आई हैं वे केवल शहरी हुआ करती थीं लेकिन बदलते वक्त के साथ रील्स के इस परिप्रेक्ष्य में भी बदलाव आया है. अब शहरी रील्स से ज्यादा देहाती रील्स देखी जाती हैं क्योंकि गरीब वर्ग इस से खुद को जोड़ कर देख पाता है. इस तरह की रील्स में गरीब वर्ग आशा की एक किरण देखता है. यह किरण उस के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के स्रोत के रूप में है.

यह तो हुई रील की बात. लेकिन अगर बात की जाए सिर्फ देहाती रील्स की तो ऐसी बहुत सी रील्स और वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफौर्म पर मौजूद हैं जो गांवदेहात की हैं और लोगों द्वारा इन्हें काफी पसंद किया जा रहा है. ऐसी ही रील्स और वीडियो बना कर यूट्यूब का डायमंड बटन और इंस्टाग्राम का ब्लू टिक लेने वाले बिहार देहात के निवासी राजा बाबू हैं जिन्होंने अपनी पूरी शादी का व्लौग ही बना डाला और अलगअलग सोशल मीडिया प्लेटफौर्म पर अपलोड कर पूरी दुनिया में फेमस हो गए.

आज वे विभिन्न प्लेटफौर्म्स से पैसा कमा रहे हैं, साथ ही, कई लोकल ब्रैंड्स के साथ कोलैब कर रहे हैं, जिन से उन्हें खासा पैसा मिल रहा है. देहाती यंगस्टर्स इसी नेमफेम के लालच में हैं. यही कारण है कि देहात में रील्स बनाने का चलन पिछले कुछ सालों में काफी ज्यादा बढ़ा है.

शौर्टकट शोहरत

ऐसा इसलिए भी है क्योंकि ईंटपत्थरों के मकान में रहने वाले ये इन्फ्लुएंसर्स अपना समय शौर्टकट में बदलना चाहते हैं. वे देखते हैं कि किस तरह 15 सैकंड की रील्स बना कर उन के ही गांव में रहने वाले लोग आज कम समय में कामयाब हो रहे हैं. कामयाब का मतलब यहां कैरियर का जमना नहीं है बल्कि इस का मतलब यह है कि उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति पहले के मुकाबले बेहतर कर ली है और यही वजह है वे लोग जो रील्स की दुनिया में नए हैं, उन के लिए यह आकर्षण का केंद्र बन जाते हैं.

ग्लैमर वर्ल्ड का आकर्षण

देहात की यंग जनरेशन को ग्लैमर वर्ल्ड अपनी ओर आकर्षित करता है. जब गांव के कच्चे मकान में रहने वाली प्रतिभा मुंबई शहर की खुशी को क्रौपटौप और डैनिम स्कर्ट में स्ट्रीट पर डांस करते हुए देखती है तो सोचती है कि यह तो मैं भी कर सकती हूं. बस, यही सोच कर प्रतिभा भी रील्स की इस दौड़ में शामिल हो जाती है. हां, वह जानती है कि उस के पास क्रौपटौप और डैनिम स्कर्ट नहीं हैं लेकिन वह यह भी जानती है कि उस के पास कौन्फिडैंस है और कौन्फिडैंस के जरिए वह अपना टैलेंट दुनिया के सामने रख सकती है और इसी के बलबुले पर वह एक दिन खुशी के स्टाइल और लुक को कौपी कर लेगी.

कहने का मतलब यह है कि देहात में रहने वाले लोगों को सोशल मीडिया का ग्लैमर वर्ल्ड अपनी ओर आकर्षित करता है, जिस के ऐवज में वे अपना कीमती समय बरबाद करते हैं और बाद में रह जाता है तो सिर्फ पछतावा.

अकसर ऐसा होता है कि देहात के रहने वाले किसी अंशु की वायरल रील्स पर मिलियंस फौलोअर्स देख कर उस का चचेरा भाई राहुल भी अपनी बोर्ड की पढ़ाई छोड़ कर घंटोंघंटों इंस्टाग्राम पर रील्स बनाता रहता है और सोचता है कि वह भी अंशु की तरह फेमस हो जाएगा. लेकिन इस बीच राहुल वह नहीं करता जो वह उस उम्र में कर सकता है, जैसे अपनी स्किल्स पर काम, पढ़ाई, एक्टिविटी वगैरहवगैरह.

बात साफ है यंग जनरेशन भेड़चाल को अपना रही है. वह दूसरे के रास्ते को अपना रास्ता बना रही है. सोचने वाली बात यह है कि इंस्टाग्राम पर हजारोंलाखों लोग रील्स बनाते हैं पर सफल कितने होते हैं, इक्कादुक्का. ऐसे में जो असफल इन्फ्लुएंसर्स हैं वे न घर के रहते हैं न घाट के, क्योंकि उन्होंने अपने सीखने के समय में इंस्टाग्राम पर रील्स बनाईं. अब उन्हें रील्स बनाने के अलावा और कुछ आता नहीं है. ऐसे में वे कहीं के नहीं रहे. अब उन के पास अपने कैरियर में संघर्ष करने के अलावा कुछ नहीं बचा.

आखिर फायदा क्या है

अगर बात करें कि इस तरह की देहाती रील्स का फायदा क्या होता है तो हम आप को बता दें कि इन से किसी का भी फायदा नहीं होता क्योंकि ये आप की स्किल्स में कोई इजाफा नहीं करतीं, न ही आप को ये कुछ ऐसा सिखाती हैं जिन्हें आप आगे ट्रांसफर कर सकें या आप के भविष्य में काम आएं.

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

जरा सोचिए 15 सैकंड की रील्स में आप क्या ही कर पाएंगे. कम से कम 15 सैकंड में आप का कोई टैलेंट तो नहीं दिखेगा. हां, यह बात अलग है कि आप 15 सैकंड में नाच कर या कोई मूमैंट क्रिएट कर के हंसी का पात्र जरूर बन जाएं. तो सोचना आप को है कि इन 15–15 सैकंड की रील्स में आप को अपना समय और पैसा बरबाद करना है या फिर कुछ ऐसा सीखना है जो आप के भविष्य में रोजगार का जरिया बने. अब फैसला आप के हाथ में है. **–प्रतिनिधि** ●

सोशल मीडिया की हकीकत बताती लैंडी परागा की हत्या

लेख • प्रियंका यादव

अमेरिका की मशहूर सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर लैंडी परागा की हत्या सोशल मीडिया के चलते हुई. इस हत्या ने एक बार फिर सवाल उठाया है कि आखिर सोशल मीडिया को अपनी लाइफ में कितना स्पेस दिया जाए.

एक सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर का इंस्टाग्राम पर पोस्ट करना उस की जान ले लेगा, ऐसा कभी किसी ने नहीं सोचा होगा. लेकिन यह हुआ इक्वाडोर की 23 साल की एक फेमस सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर के साथ.

यह फेमस इन्फ्लुएंसर और कोई नहीं साउथ अमेरिका के देश इक्वाडोर की ब्यूटी क्वीन लैंडी परागा गोयबुरो थी. उन की अज्ञात हत्यारों ने एक रैस्तरां में गोली मार कर हत्या कर दी. अपनी मौत से कुछ देर पहले ब्यूटी क्वीन ने रैस्तरां में खाना खाते हुए एक फोटो पोस्ट की थी. उस ने इंस्टाग्राम पर जो फोटो पोस्ट की उस में उस ने अपनी लोकेशन शो कर दी. बस, इसी से हत्यारों को उन के रैस्तरां में होने का क्लू मिल गया. यह घटना बीते 28 अप्रैल को क्यूवेदो शहर के एक रैस्तरां में घटी. गोयबुरो इस शहर की रहने वाली नहीं थी, वह यहां एक मैरिज अटैंड करने आई थी.

बता दें कि गोयबुरो ने साल 2022 में मिस इक्वाडोर प्रतियोगिता में भाग लिया था. उस के इंस्टाग्राम पर करीब 1 लाख 73 हजार फौलोअर्स हैं. उस ने 2022 मिस इक्वाडोर प्रतियोगिता में लौस रियोस प्रोविंस को रिप्रेजैंट किया था. इस के अलावा लैंडी खुद की स्पोर्ट्सवियर लाइन भी चलाती थी.

सीसीटीवी में यह घटना कैद हो गई. वीडियो में गोयबुरो एक व्यक्ति से बात करते हुए दिख रही है, जबकि वह रैस्तरां की तरफ आ रहे बंदूक लिए 2 व्यक्तियों को देख रही है. जब उन में से एक व्यक्ति रैस्तरां के गेट के पास खड़ा था तो दूसरा व्यक्ति उस की ओर दौड़ा और उस ने अपनी बंदूक से गोली चलाई. लैंडी परागा ने छिपने की कोशिश की लेकिन असफल रही.

गोली लगने से गोयबुरो की मौके पर ही मौत हो गई जबकि दूसरा व्यक्ति घायल हो गया जिस से वह बात कर रही थी. घटना को अंजाम देने के बाद दोनों आरोपी वहां से भाग गए.

शुरुआती जांच में सामने आया कि गोयबुरो का नाम भ्रष्टाचार जांच में भी सामने आया था, जिस में न्यायिक अधिकारियों को संगठित अपराध से जोड़ा गया था. द न्यूयौर्क पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार, दिसंबर 2023 में उस का नाम मृत ड्रग तस्कर लिएंड्रो नोरेरो और उस के अकाउंटैंट हेलिव एंगुलो के बीच हुई चैट में आया था.

यह घटना इस ओर भी इशारा करती है कि असल में सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर के पास कोई पावर नहीं होती, वे सिर्फ स्क्रीन के कागजी शेर हैं जिन की असल में कोई पूछ नहीं है. ज्यादा से ज्यादा इन को लोग स्क्रीन पर देख सकते हैं, इन का स्टाइल कौपी कर सकते हैं. इस से ज्यादा और कुछ नहीं. वहीं अगर इन्फ्लुएंसर की बात करें तो सोशल मीडिया पर हजारोंलाखों की संख्या में इन्फ्लुएंसर्स भरे पड़े हैं जिन का इन प्लेटफौर्म के बाहर कोई खास अस्तित्व नहीं है.

कोई पावर नहीं

बात करें इन इन्फ्लुएंसर्स के पावर की तो आएदिन इन्हें धमकियां आती रहती हैं. गोयबुरो को भी धमकी जरूर आई होगी लेकिन अंत क्या हुआ, उस की भी हत्या हो गई. बात साफ है, लाखों फौलोअर्स ले कर भी इन इन्फ्लुएंसर्स के पास पावर नाम की कोई चीज नहीं होती चाहे इन्हें राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री ही क्यों न सम्मानित कर दें. ये इन्फ्लुएंसर्स इसी को अपनी उपलब्धि मान ले रहे हैं.

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

सोशल मीडिया बहस

इस हत्या के बाद सोशल मीडिया प्लेटफौर्म इंस्टाग्राम की भी चर्चा तेज हो गई है. असल में इंस्टाग्राम पर फोटो पोस्ट करना और इंस्टाग्राम लोकेशन औन करने की वजह से ही कातिलों को पता चला कि लैंडी परागा कहां है. अब सोशल मीडिया पर लोग लिख रहे हैं कि जिस इंस्टाग्राम पर रील डाल कर उस ने लाखों की कमाई की वही उस की मौत का कारण बना. वहीं कुछ यूजर्स ने लिखा है कि अगर वह इंस्टाग्राम पर फोटो पोस्ट करना और लोकेशन औन करना इग्नोर करती तो शायद आज वह जिंदा होती.

यूजर्स का ऐसा कहना काफी हद तक सही भी है. हर चीज सोशल मीडिया नहीं होती. आप अपनी हर एक्टिविटी को सोशल मीडिया पर बताते रहेंगे तो इस तरह के खतरे सामने आएंगे. हर बात बताना खतरनाक होता है. अगर आप फेमस और अमीर सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर हैं तो आप को पलपल की अपनी खबर देना भारी पड़ सकता है.

रियल लाइफ से अलग

आज रियल लाइफ में लोगों के जितने दोस्त नहीं हैं उस से कहीं ज्यादा लोग उन के सोशल मीडिया अकाउंट पर हैं. आज फौलोअर्स बनाने की दौड़ है. ऐसे में ऊलजलूल लोग जुड़ जाते हैं. कितने ही ट्रोलिंग करते हैं. कितने ही धमकियां देते हैं. इस के बावजूद अपनी छोटी से छोटी डिटेल सोशल मीडिया पर देना बेवकूफी के सिवा और कुछ नहीं.

फेमस होने का लालच खतरनाक है. असल जिंदगी में जब आप इन के सामने आएंगे तो ये आप के साथ सैल्फी लेंगे. लेकिन जब कभी आप रियल लाइफ में किसी मुसीबत में फंसेंगे तो ये आप को कहीं नजर नहीं आएंगे. वहीं इन का कुछ तबका आप के मुसीबत में फंसने पर अपना काम भुनाने में लग जाता है. वे अपना मोबाइल निकाल कर आप की रील बनाने में लग जाते हैं, ऐसा कर के वे, बस, अपने फौलोअर्स बढ़ाना चाहते हैं.

तर्कशीलता से नाता नहीं

असल में इंस्टाग्राम, फेसबुक, यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लेटफौर्म आप को तर्कशीलता के आधार पर कुछ सोचने नहीं देते. यह बस ट्रैंड के आधार पर काम करता है, एक ऐसा ट्रैंड जिस का सिरपैर नहीं है. ●

इंटरनैट के फर्जी DON

रजत दलाल की चिंदी हरकतें

लेख • रोहित

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

सोशल मीडिया पर रजत दलाल जैसे गैंगस्टर टाइप इन्फ्लुएंसर्स आने लगे हैं. ये मोरल पुलिसिंग के नाम पर कानून अपने हाथ में ले रहे हैं. इन का काम लोगों को डरानेधमकाने वाली रील बनाने का है. बावजूद इस के, ये पौपुलर हैं, दरअसल देखने वाले फौलोअर्स सहीगलत का फर्क नहीं समझ पा रहे.

सोशल मीडिया चलाने वाला युवा भले घर के कोनों में लगे मकड़ी के जालों को न जान रहा हो पर वह रजत दलाल को जरूर जानता है, जो आजकल इंटरनैट का डौन या गैंगस्टर के नाम से जाना जा रहा है. वही रजत दलाल जो सोशल मीडिया पर फिटनैस टिप्स देने के नाम पर लफंगई किया करता है, लोगों को धमकाता है और जस्टिस के नाम पर कानून अपने हाथ में लेता है.

अहमदाबाद के रहने वाले रजत दलाल के इंस्टाग्राम पर 10 लाख से ज्यादा फौलोअर्स हैं. ये फौलोअर्स कैसे और क्यों इस से जुड़ गए, यह सोचने वाली बात है पर 6 जून को अहमदाबाद पुलिस ने रजत को गिरफ्तार किया तो इन 10 लाख में से कोई एक उस के बचाव में नहीं आया.

इंटरनैट पर रजत, एल्विश, मैक्सटर्न और न जाने कितने गुंडई दिखाने वाले ढेरों लफंगे उग आए हैं, जो गालीगलौज कर, एकदूसरे को धमकियां दे कर, फालतू के बवाल खड़े कर के व्यूज और फौलोअर्स बटोर रहे हैं. ये इंटरनैट पर विवाद खड़े कर रहे हैं, कभी धर्म की आइडैंटिटी ले कर तो कभी जाति की आइडैंटिटी ले कर. रजत दलाल उन्हीं में से एक है, जिसे इंटरनैट का डिजिटल गुंडा कहा जा सकता है.

हाल ही में रजत को गिरफ्तार किया गया, वजह यह थी कि उस पर आरोप है कि उस ने 18 साल के एक लड़के को अगवा कर उस के साथ मारपीट की और उस के मुंह पर पेशाब किया. बताया जा रहा है कि मामला तब शुरू हुआ जब लड़के ने रजत दलाल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किया, जिस के बाद रजत ने गुस्से में आ कर लड़के की पिटाई कर दी.

मामला क्या है

लड़का एक कालेज का स्टूडैंट है. कथित तौर पर उस से टौयलेट साफ कराया गया और उस के मुंह पर गोबर भी डाला गया. बात यहीं खत्म नहीं हुई, मारपिटाई के बाद लड़के को उस के घर के सामने छोड़ते हुए उस की मां को भी धमकाया गया कि हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, हम 'हरियाणा' के जाट हैं.

इस मामले में लड़के और उस की मां ने पुलिस से शिकायत की, जिस के बाद पुलिस ने रजत दलाल और उस के साथियों को गिरफ्तार कर लिया. दरअसल लड़के ने रजत के जिम के अंदर का एक वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किया. उस ने उस में कैप्शन लिखा कि ''रोज सुबह अपना मुंह (रजत) जिम में दिखा कर मेरा दिन खराब करता है.''

बताया जा रहा है कि रजत का जो वीडियो लड़के ने पोस्ट किया वह खूब वायरल हुआ, जिस के बाद रजत ने युवक को सोसाइटी के बाहर बुलाया और अपने दोस्तों के साथ उसे अगवा कर लिया. रजत दलाल और उस के साथियों ने लड़के को गालियां दीं और पूछा कि 'तेरी हिम्मत कैसे हुई मेरा वीडियो बनाने की. मैं तुझे टुकड़ेटुकड़े कर दूंगा, तुझे छोड़ने वाला नहीं हूं.'

इस के बाद रजत दलाल और उस के साथी उस युवक को जगतपुर स्थित ग्रीन गैल्स सोसाइटी के एक फ्लैट में ले गए और

उस को पीटते हुए फ्लैट का टौयलेट साफ कराया. लड़का जब पिटाई से बेहोश हुआ तो उस के चेहरे पर पेशाब कर दिया. जब लड़का होश में आया तो रजत ने घर छोड़ दिया.

कहा जा रहा है कि रजत दलाल ने उस की मां से कहा, 'मैं इस लड़के को जान से भी मार सकता था, लेकिन यह बहुत छोटा है, सो इसे छोड़ रहा हूं. मैं हरियाणा का जाट हूं. यहां मेरे बड़े लोगों से कनैक्शन हैं. पुलिस मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगी, वह मेरी जेब में है.'

देखने वाले जिम्मेदार

अब आते हैं इस की मूल वजह पर कि यह घटना हुई क्यों और इस तरह के लफंगे इन्फ्लुएंसर्स को बढ़ावा कहां से मिलता है? दरअसल इस में जितनी गलती रजत दलाल जैसों की है उस से कहीं ज्यादा उस जैसों को देखने वाले युवाओं की है. वे रजत दलाल जैसे टौक्सिक इन्फ्लुएंसर्स से इन्फ्लुएंस हो बैठते हैं और फेमस होने के लिए वही हरकतें कर बैठते हैं जो सही नहीं हैं.

इस वीडियो में पिटने वाला युवा उस ट्रैंड का शिकार हो गया जिस में रजत की पिछली लड़ाई से पिटने वाले और पीटने वाले को फेम मिली थी. फौलोअर्स बढ़ाने के ये शौर्टकट पैतरे हर दूसरा लुक्खा इन्फ्लुएंसर अपनाने लगा है. वे जानबूझ कर कोई बवाल करते हैं ताकि उन की वीडियोज को हाइप मिले.

एल्विश और मैस्कटर्न की नौटंकी

मामला फरवरी–मार्च महीने का है जब यूट्यूबर्स एल्विश यादव और मैक्सटर्न के बीच लड़ाई हुई थी. मैक्सटर्न का आरोप था कि एल्विश ने उसे अपने साथियों के साथ मिल कर बुरी तरह पीटा. जान से मारने की धमकी भी दी. इसे ले कर मैक्सटर्न ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी.

पुलिस ने एल्विश को 12 मार्च तक मामले में पेश होने के लिए नोटिस भेजा था. लेकिन 10 मार्च की शाम को एल्विश यादव ने एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट अपलोड की जिस के कैप्शन में लिखा, ''भाईचारा औन टौप.'' बताया गया कि दोनों के बीच रजत दलाल ने सुलह करवाई. लेकिन मामला यहीं नहीं रुका, इस के बाद रजत का झगड़ा किसी और गैंग से शुरू हो गया और इंटरनैट पर ही लफंगों की गैंगवार शुरू हो गई. खबर यह भी थी कि यह सब फेमस और पौपुलैरिटी लेने के लिए स्टंट था.

यह तो नहीं कहा जा सकता कि हाल की घटना भी पौपुलैरिटी पाने के लिए किया गया स्टंट था मगर पिछले ट्रैक उठा कर देखें तो इस पर संदेह तो किया ही जा सकता है. सारा माजरा जल्दी वायरल होने का रह गया है. लड़के ने भी रजत पर पोस्ट कर के फेमस होने की ही कोशिश की. हो भी सकता है, लड़का जल्दी फेमस होने की जुगत में रहा हो और अगर यह न भी हो तो भी बेमतलब के पोस्ट सोशल मीडिया पर होगी तो इस तरह की चीजें सामने आएंगी ही.

रजत दलाल का बुरा प्रभाव

रजत के फौलोअर्स उसे सिग्मा मेल मानते हैं सिर्फ इसलिए क्योंकि उस की बोलचाल में गालियां हैं. वह अपनी रील्स में या तो जिम में लिफ्टिंग कर रहा होता है या चलतेफिरते मोनोलोग करता है जिस में गालियां ही गालियां होती हैं. वह खुलेतौर पर जान से मारने की धमकियां देने और एंटरटेनमैंट के नाम पर ट्रैफिक रूल की धज्जियां उड़ाते दिखाई देता है.

कुछ समय पहले उस ने सड़क की रौंग साइड पर 100 किमी/घंटा की रफ्तार से गाड़ी चलाते हुए खुद की एक वीडियो रिकौर्ड की थी. इस में वह न केवल अपनी जिंदगी को खतरे में डाल रहा था बल्कि कितनों के लिए खतरे का कारण बना होगा. सड़कों पर ऐसी रैश ड्राइविंग करना कितना खतरनाक हो सकता है, यह पोर्शे कार क्रैश के उदाहरण से समझा जा सकता है. हैरानी तो यह कि वह वीडियो कैप्चर करता है और सोशल मीडिया पर भी साझा करता है, लेकिन बावजूद इस के, पुलिस सच में उस पर कुछ ऐक्शन नहीं लेती.

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

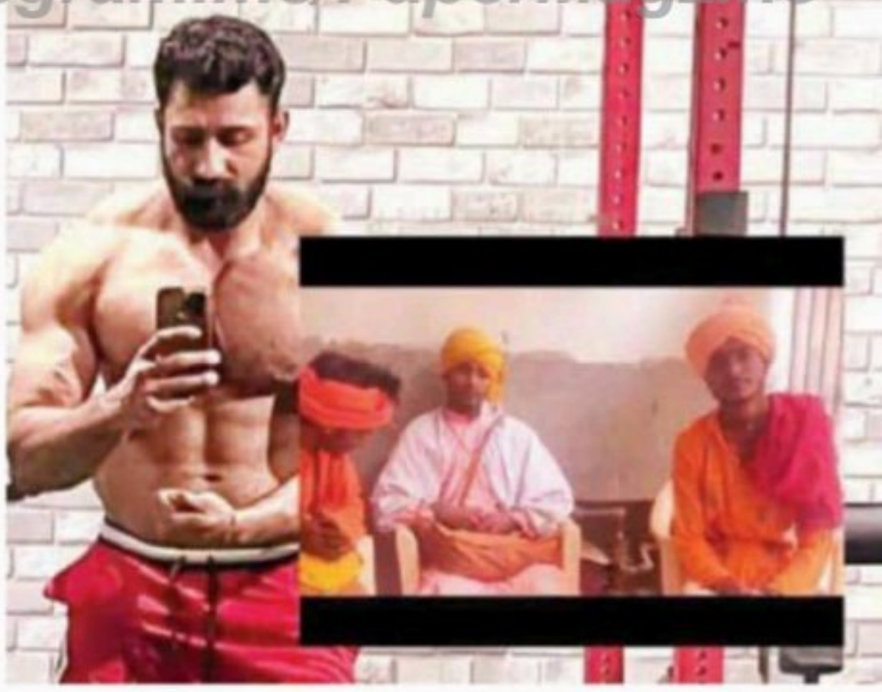

उस की रील्स की छानबीन की जाए तो युवाओं को टौक्सिसिटी के अलावा कुछ भी देखने को नहीं मिलेगा. चार डंबल उठा लेने से और मुंह से गालियां देने से अगर फौलोअर्स बढ़ जाते हैं तो इस से बड़ी दुर्गति और क्या ही हो सकती है युवाओं के लिए.

रजत दलाल जैसे इन्फ्लुएंसर्स को गलत कारणों से फेम और पैसा मिला रहा है और चिंता इस बात की है कि युवा सोशल मीडिया पर उसे भी देख रहा है. उस की हरकतें युवाओं पर गलत इंपैक्ट डाल रही हैं. वह जस्टिस के नाम पर कानून अपने हाथों में लेता है, चाहे वह सही हो या गलत. ऐसा करने का अधिकार उसे किस ने दिया? ●

सक्सैस से कोसों दूर नई क्रश

लेख • प्रियंका यादव

शरवरी वाघ बौलीवुड की नई क्रश है. 'मुंज्या' फिल्म सफल हुई तो यंगस्टर्स ने हाथोंहाथ लिया उसे. मगर अभी यह उस की शुरुआत है. कई ऐक्ट्रैसेस चमकते ही बुझ जाती हैं. उस का सफर अभी कोसों दूर है.

इन दिनों यंगस्टर्स की जबान पर एक गाना छाया हुआ है. यह गाना हौरर कौमेडी फिल्म 'मुंज्या' का है. गाने के बोल हैं– 'तरस नहीं आया तुझ को, खुदगर्ज इश्क ये मेरा समझ नहीं मुझ को...' जितना इस गाने को पसंद किया जा रहा है उस से कहीं ज्यादा इस में डांस करने वाली ऐक्ट्रैस को पसंद किया जा रहा है. असल में क्या लड़की क्या लड़के, सभी इस ऐक्ट्रैस के दीवाने हो गए हैं. इंस्टाग्राम पर इस गाने पर खूब रील बन रही हैं.

'मुंज्या' फिल्म को यंग लड़केलड़कियां पसंद कर रहे हैं. सिनेमाहौल में लड़कियों का एक ग्रुप 'तरस नहीं आया तुझ को...' गाने पर डांस कर रहा है. यह वीडियो इंटरनैट पर तेजी से वायरल हो रहा है. वहीं दूसरी ओर बौक्सऔफिस पर 'मुंज्या' लगातार अच्छा बिजनैस कर रही है.

बात करें अगर गाने की तो इस गाने में अपने डांस से सब को दीवाना बनाने वाली लड़की कोई और नहीं बल्कि शरवरी वाघ है. शरवरी पौलिटिकल फैमिली से बिलौंग करती है, वह मनोहर जोशी की नातिन है, जो महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री थे. लोगों को शरवरी का फ्रैश फेस, हौट एंड सैक्सी बौडी और बेहतरीन डांस मूव्स अपील कर रहे हैं. साथ ही, फिल्म में शरवरी की ऐक्टिंग भी काबिलेतारीफ है.

सिर्फ इस फिल्म में ही नहीं बल्कि अभी तक की सारी फिल्मों में शरवरी ने अच्छी ऐक्टिंग की है. यह कहना गलत न होगा कि आने वाले दिनों में शरवरी मेकर्स की पहली पसंद हो सकती है.

शरवरी महाराष्ट्र की रहने वाली है और उस ने अपनी स्कूलिंग भी वहीं से की है. शरवरी का जन्म 14 जून, 1997 को मुंबई में एक मराठी फैमिली में हुआ था. उस के फादर शैलेश वाघ बिल्डर और मां नम्रता वाघ आर्किटैक्ट हैं. उस की बहन भी आर्किटैक्ट ही है.

बेहद खूबसूरत है शरवरी

27 साल की शरवरी असल जिंदगी में काफी खूबसूरत है. ऐसा उस के इंस्टाग्राम हैंडल पर मौजूद तसवीरों से पता चलता है. इन फोटोज से वह अपने किलर लुक से फैंस के दिलों पर बिजलियां गिराने का काम करती है. बात करें अगर उस के हौटनैस की तो वह किसी भी बी टाउन ऐक्ट्रैस से कम नहीं है. अपनी बोल्डनैस से शरवरी हर किसी को दीवाना बना रही है.

शरवरी ने फिल्म इंडस्ट्री में आने से पहले ऐक्टिंग कोर्स और सिनेमा वर्कशौप किए. इस के बाद शरवरी को साल 2020 में रिलीज हुई अमेजन प्राइम की वैब सीरीज 'द फौरगौटन आर्मी – आजादी के लिए' में मुख्य किरदार निभाने का मौका मिला. उस ने इस सीरीज से ही अपने ऐक्टिंग कैरियर की शुरुआत की.

शरवरी की 'मुंज्या' पहली फिल्म नहीं है. इस से पहले उस ने 2020 में बौलीवुड की फिल्म 'बंटी और बबली 2' में काम किया जिस के लिए उसे स्टार डैब्यू औफ द ईयर-फीमेल के लिए आइफा अवार्ड और 2022 में बैस्ट फीमेल डैब्यू के लिए फिल्मफेयर अवार्ड भी मिला है. इस के अलावा शरवरी ने लव रंजन और संजय लीला भंसाली को असिस्ट भी किया है. असिस्टैंट के तौर पर उस ने 'प्यार का पंचनामा 2', 'बाजीराव मस्तानी' और 'सोनू के टीटू की स्वीटी' फिल्में की हैं. उस की अपकमिंग फिल्मों की बात करें तो इसी साल 12 जुलाई को फिल्म 'वेदा' रिलीज होने वाली है. इस में वह अभिनेता जौन अब्राहम के साथ दिखेगी.

आलिया संग नजर आएगी शरवरी वाघ

ऐक्ट्रैस ने एक इंटरव्यू में स्पाई यूनिवर्स के बारे में भी खुल कर बात की. उस ने कहा, ''मैं इस फिल्म में आलिया के साथ स्क्रीन शेयर कर रही हूं. वे मेरी फेवरेट ऐक्ट्रैस हैं. यह बहुत ही बड़ी स्पाई कमर्शियल फिल्म है. यह सभी फिल्मों से काफी अलग है. मैं खुशी अनुभव करती हूं कि मुझे यह मौका मिला.''

उस ने प्यार को ले कर भी अपनी राय रखी है. मीडिया से बात करते हुए शरवरी ने कहा, ''ईमानदारी से, मैं ऐसी पर्सन हूं जो पूरे दिल से प्यार करती है या नहीं करती, बीच में कुछ नहीं है. इसलिए, मैं प्यार के लिए किस हद तक जा सकती हूं, यह पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करता है कि मैं कितना प्यार करती हूं. मैं प्यार के लिए सचमुच देशों, महाद्वीपों, महासागरों की यात्रा कर सकती हूं. मैं प्यार के लिए इंटरगैलेक्टिक भी जा सकती हूं. यह बेइंतहा मोहब्बत (अमर प्रेम) की तरह है.''

संघर्ष को ले कर हुई ट्रौल

अपनी हालिया रिलीज फिल्म 'मुंज्या' के प्रमोशन के दौरान उस ने एक इंटरव्यू दिया. इस इंटरव्यू में शरवरी ने अपने संघर्षों के बारे में खुल कर बात की और बताया कि उस ने वाईआरएफ की कई फिल्मों के लिए औडिशन दिए थे. उस ने फिल्म 'सुल्तान' और 'सूई धागा' के लिए भी औडिशन दिया था.

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

शरवरी वाघ के स्ट्रगल की यह कहानी रेडिट यूजर को झूठी लगी और अभिनेत्री ट्रौल हो गई. ट्रौलर्स ने उस की इस कहानी पर जम कर ट्रौल किया. एक ट्रौलर ने लिखा, ''वह महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री की पोती है और एक मजबूत परिवार से आती है.'' एक अन्य ट्रोलर ने कहा, ''आजकल की अभिनेत्रियां इतनी बनावटी क्यों हैं?'' वहीं एक यूजर ने तो शरवरी वाघ को पुतले की तरह बता दिया.

डेटींग कि खबरें गरम

बौलीवुड के गलियारे में अफवाह फैली हुई है कि शरवरी विक्की कौशल के भाई सनी कौशल को डेट कर रही है. उसे अकसर सनी के साथ लंच और डिनर डेट पर स्पौट किया गया है. और तो और, वह कई बार विक्की कौशल और कैटरीना कैफ, सनी कौशल के साथ वैकेशन पर भी गई है.

अब देखना यह है कि वे सिर्फ दोस्त हैं या सच में डेट कर रहे हैं. खैर, यह भी सही है कि अगर आप को बौलीवुड में टिकना है तो किसी नामीगिरामी या बड़े बिजनैसमैन के बेटे को डेट करो और फिल्मों में चांस पाते रहो. ऐसा कर के आप न सिर्फ पैसे कमा पाएंगी बल्कि फिल्ममेकर्स की नजरों में भी बनी रहेंगी.

नैशनल क्रश का मिला टैग

शरवरी को 'मुंज्या' के फिल्म के बाद नैशनल क्रश का टैग मिल गया है. लेकिन जैसा कि हम पिछले एक साल से देखते आए हैं कि कितने ही नैशनल क्रश आए हैं और गए हैं. अभी दोतीन महीने पहले ही 'लापता लेडीज' की हीरोइन प्रतिभा रांटा को नैशनल क्रश का टैग दिया गया था.

इस से पहले फिल्म 'एनिमल' में भाभी 2 के नाम से फेमस हुई हीरोइन तृप्ति डिमरी भी नैशनल क्रश बनी थी. इस से पहले के कुछ वक्त में जाएं तो रश्मिका मंदाना ने कई महीनों तक इस टैग को संभाला था. कहने का मतलब यह है कि अभी तो शरवरी नैशनल क्रश बन गई है लेकिन एक महीना होगा नहीं कि कोई दूसरी हीरोइन नैशनल क्रश का टैग अपने सिर पर सजाए हुए बैठी होगी.

अब यह तो शरवरी की ऐक्टिंग स्किल्स और वर्क कल्चर ही बताएगा कि वह बौलीवुड इंडस्ट्री में कितनी दूर जा सकती है. वैसे भी, इंडियन फिल्म इंडस्ट्री में ऐक्ट्रैस के लिए काम जवानी तक ही होता है. शादी होते ही काम मिलना कम हो जाता है और 38–40 से ऊपर होते ही मां के रोल मिलने शुरू हो जाते हैं.

शरवरी, हम तो यही कहेंगे कि आप जितनी जल्दी हो सके ज्यादा से ज्यादा काम कर लो वरना कहीं आप को भी मां के रोल औफर न होने लग जाएं. ●

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

टैक गैजेट्स

ब्लूटूथ ट्रैकर

इन्हें ब्लूटूथ फाइंडर भी कहा जाता है. यह एक छोटा गैजेट है, जिस के जरिए आप अपनी चीजों पर नजर रख सकते हैं. अकसर जरूरत की कुछ चीजें इधरउधर खो जाती हैं जिन्हें ढूंढ़ना मुश्किल हो जाता है, यह डिवाइस उन्हीं चीजों को ढूंढ़ने में काम आती है. जब तक कि आप का फोन ब्लूटूथ रेंज के 300 फुट के अंदर है. आप इस से चाबी, फोन, बैकपैक, वौलेट, लगेज, पार्क की हुई कार, छाता जैसी कई चीजें ढूंढ़ सकते हैं.

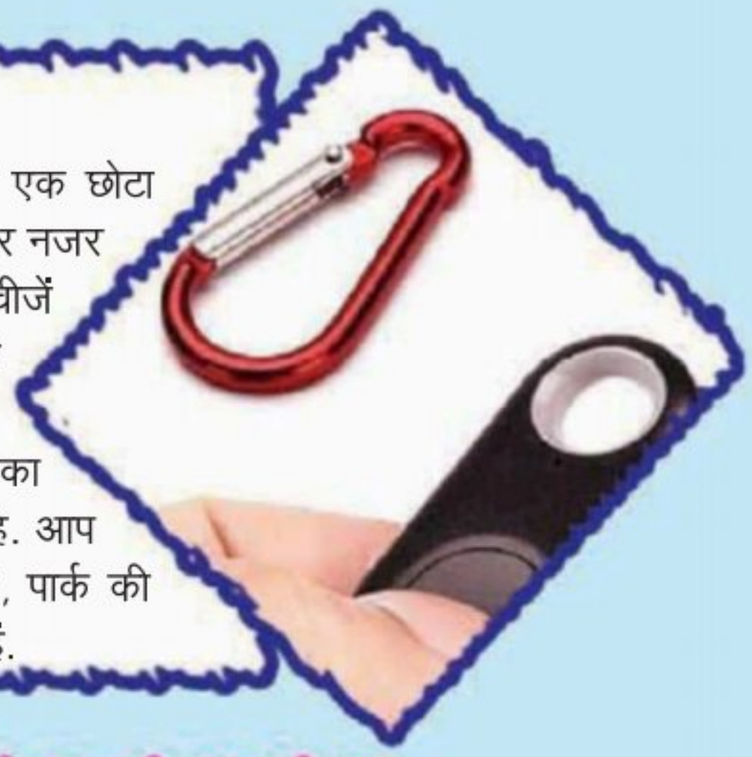

पोर्टेबल यूएसबी कंडैंसर माइक्रोफोन

अगर आप एक ब्लौगर हैं या फिर वौयसओवर आर्टिस्ट या यूट्यूब चैनल में हैं. यह पोर्टेबल और मिनी यूएसबी माइक आप के लिए बहुत उपयोगी साबित हो सकता है. आप इस छोटे से उपकरण को सीधे अपने लैपटौप पर क्लिप कर सकते हैं, इस्तेमाल कर सकते हैं. यह गैजेट वायरलैस है. यह पोर्टेबल यूएसबी कंडैंसर माइक्रोफोन सभी ब्लौगर्स के लिए इस्तेमाल हो सकता है, क्योंकि इस की वौयस रिकौर्डिंग तकनीक बहुत अच्छी है.

FOR More Newspapers & Magazines https://t.me/PaperMagzine

स्मार्टलौक

स्मार्टलौक, डोरलौक का एक स्मार्ट टैक वर्जन है. इस में कीलैस एंट्री, गेस्ट एक्सैस कंट्रोल और औटोमेटिक लौक व अनलौक फंक्शन जैसी सुविधाएं मिलती हैं. आप इसे अपने फोन से कनैक्ट कर सकते हैं और इन सारी एक्टिविटीज को ट्रैक कर सकते हैं. ये सिक्योरिटी पर्पज से बेहतर औप्शन है जोकि पूरी जानकारी आप की फीड में दिखाता रहता है. स्मार्टलौक का डोरसैंस आप को यह भी बताएगा कि आप ने दरवाजा ठीक से लगाया है या नहीं.

फिटनैस ट्रैकर

साल 2024 में ज्यादातर लोगों ने फिटनैस को अपना गोल बनाया है. अपनी फिटनैस को मजबूत रखने के लिए वे हर कोशिश में लगे हैं. इस के लिए उन्हें फिटनैस ट्रैकर वाच की जरूरत पड़ती है जिस में स्लीप ट्रैकिंग से ले कर हार्टबीट और ब्लडप्रैशर तक नापा जाता है. आजकल ऐसी वाचेस का क्रेज लगातार बढ़ रहा है.

एम आई होम सिक्योरिटी कैमरा

एम आई होम सिक्योरिटी कैमरा घर की सुरक्षा के लिए एक महत्त्वपूर्ण डिवाइस है. इस की मदद से 1080 पिक्सल पर 130 डिग्री वाइड एंगल के साथ वीडियो रिकौर्ड किया जा सकता है. इस की खासीयत यह है कि इस में आर्टिफिशियल इंटैलिजैंस (एआई) का सपोर्ट, पावर डिटैक्शन इंजन, इंर्फारेड नाइट विजन के साथ बोलने का फीचर भी है. इस में 5 वोल्ट–1 एंपियर का पावर इनपुट, माइक्रो एसडी कार्ड सपोर्ट और वाईफाई का सपोर्ट है.

गुड्ससिटी गारमैंट स्टीमर

अपने कपड़ों को सिलवटों से मुक्त रखना एक मुश्किल काम हो सकता है और प्रैस हर कपड़े पर काम नहीं आती. इस के लिए गारमैंट स्टीमर का इस्तेमाल होता है. हलके और पोर्टेबल इस गारमैंट स्टीमर को आप के सूटकेस में रखा जा सकता है और यह कपड़ों को भाप की मदद से आसानी से प्रैस कर देता है. यह एक पानी की छोटी सी टंकी के साथ आता है. कौंपैक्ट घरों के लिए भी यह एक स्मार्ट विकल्प है. **–प्रतिनिधि** ●

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

इंट्रैस्टिंग फैक्ट्स

पीरियड को पीरियड कब कहा जाने लगा

मासिकधर्म को पहली बार टीवी पर 'पीरियड' 1985 में कहा गया. पीरियड शब्द का इस्तेमाल टैम्पैक्स के एक विज्ञापन में एक वाक्य में आया. इस से पहले इसे मासिकधर्म या मैन्सुरेशन ही कहा जाता था. 1972 तक पैड और टैम्पोन का विज्ञापन टीवी पर नहीं किया जा सकता था. बैन हटने के लगभग 13 साल बाद मैन्सुरेशन की बात टैम्पोन के एक ऐड में की गई.

हैडफोन बढ़ा सकते हैं 700 टाइम ज्यादा बैक्टीरिया

हैडफोन पहनना बुरा नहीं है लेकिन इसे 30 मिनट से ज्यादा पहनना बुरा है. ऐसा कहना है डाक्टर्स का. जब आप हैडफोन लगाते हैं तो हैडफोन आप के कानों को प्राकृतिक हवा से ढक लेते हैं जिस से एक घंटे में बैक्टीरिया का उत्पादन 700 फीसदी बढ़ जाता है. आप का कान का परदा स्वाभाविक रूप से उस मात्रा में बैक्टीरिया के प्रवेश को सहन नहीं कर सकता है, इसलिए यह लंबे समय में दर्द या सुनने की क्षमता खोने के रूप में प्रतिक्रिया देना शुरू कर देता है.

FOR More Newspapers & Magazines https://telegramme/PaperMagzine

माइक्रोवेव उपकरण के आविष्कारक को मिले थे महज 2 डौलर

पर्सी स्पैंसर अमेरिकन एप्लायंस कंपनी (अब रेथियोन) के लिए एक रिर्सचर के रूप में काम कर रहे थे. जब उन्होंने देखा कि इलैक्ट्रो मैगनेटिक वेव्स का उपयोग करने वाले एक रडार सैट ने उन की जेब में पड़ी कैंडी बार को पिघला दिया तो उन्हें इस से खाने को गरम करने के लिए माइक्रोवेव बनाने का आइडिया सूझा. इस से आइडिया ले उन्होंने एक धातु का डब्बा बनाया जिस का कंपनी ने ही पेटेंट करा लिया. यह 1945 की बात है. इस के लिए उन्हें 2 डौलर का बोनस मिला, रोयल्टी नहीं.

महिलाओं का दिमाग पुरुषों की तुलना में अधिक गरम होता है

एमआरसी लैबोरेटरी फौर मोलिक्यूलर बायोलौजी के अनुसार महिलाओं का दिमाग पुरुषों की तुलना में अधिक गरम होता है, जो लगभग 105.8ए फारेनहाइट (41 डिग्री) तक पहुंच जाता है. यह अंतर सब से अधिक पीरियड के कारण होता है. दिमाग के बारे में एक रोचक तथ्य यह भी है कि मस्तिष्क का तापमान रात को सोने से पहले गिर जाता है और दिन में बढ़ जाता है.

सोते समय सिकुड़ जाता है आप का दिमाग

विस्कौन्सिन–मैडिसन विश्वविद्यालय के नींद और चेतना केंद्र के रिर्सचरों ने चूहों पर अध्ययन किया कि सोते समय उन के दिमाग में क्या होता है. डा. चियारा सिरेली और डा. गिउलिओ टोनोनी ने पाया कि कुछ घंटों की नींद के बाद दिमाग के आकार में 18 प्रतिशत की कमी आई. डरिए मत, इस में घबराने की बात नहीं है, ऐसा होने से आप के दिमाग की क्षमताओं के विकास में मदद मिलती है.

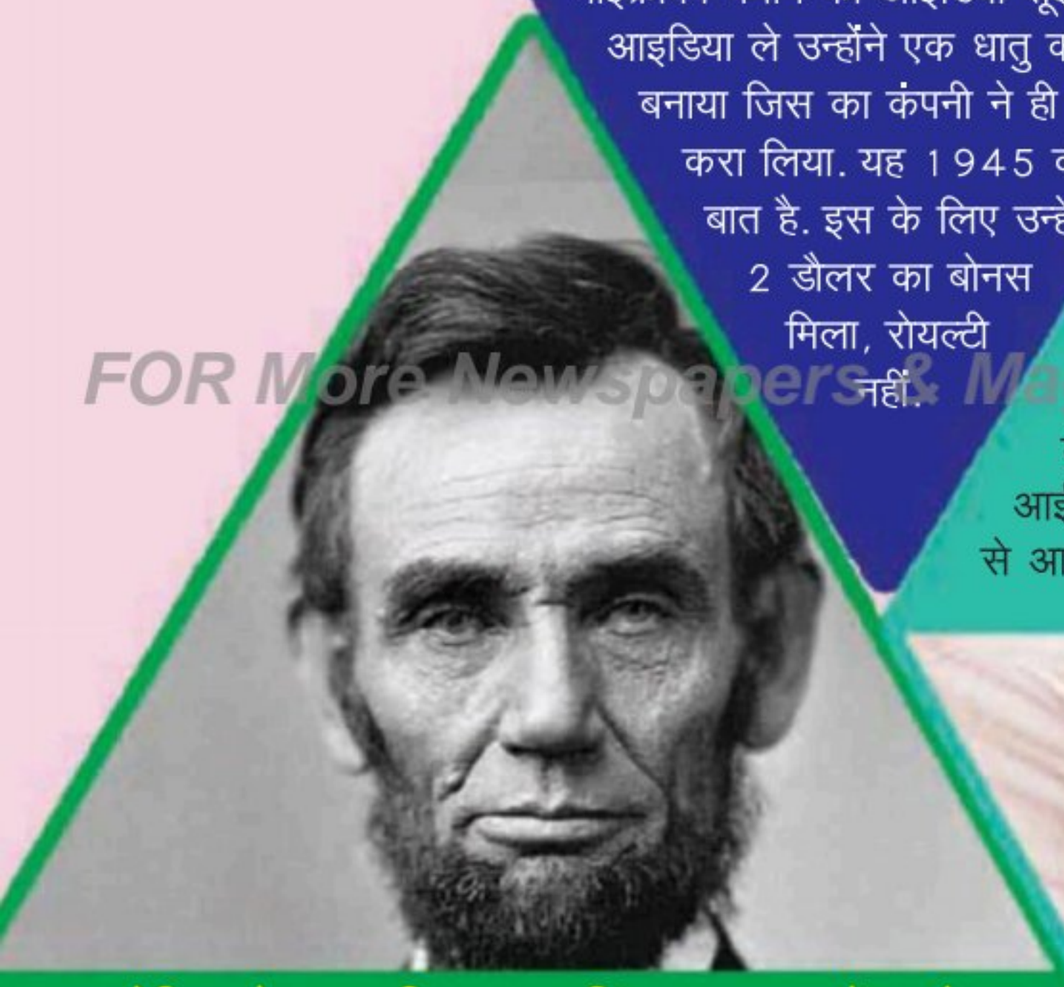

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन एक बारटैंडर थे

संयुक्त राज्य अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति ने गुलामों और संघ की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी थी लेकिन आप यह नहीं जानते कि वे एक लाइसैंसप्राप्त बारटैंडर थे. वे इलिनोइस में बेरी और लिंकन नामक एक स्टोर के आंशिक मालिक भी थे, जो शराब, बेकन और शहद सहित कई सामान बेचता था. लिंकन का शराब लाइसैंस 1930 में खोजा गया था और स्प्रिंगफील्ड शराब की दुकान में उस का डिस्प्ले किया गया था.

–प्रतिनिधि ●

FOR More Newspapers & Magazines https://t.me/PaperMagzine

पौकेट मनी मांगें नहीं, कमाएं

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

लेख • मिनी सिंह

स्कूली शिक्षा पूरी होने के बाद हायर एजुकेशन के लिए युवाओं को दूसरे शहरों की तरफ रुख करना पड़ता है. ऐसे में सब से बड़ी समस्या उन के रहनसहन में होने वाले खर्चों की आती है. क्या करें कि घर से पैसे मांगने की जगह पढ़ाई करते हुए खुद से जुगाड़ कर सकें, जानिए.

21 साल की ऋचा अहमदाबाद में रह कर इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही है. यहां वह एक पीजी में 2 लड़कियों के साथ रूम शेयरिंग में रहती है. उसे महीने के 8 हजार रुपए देने पड़ते हैं. ऊपर से बिजली का बिल और कपड़े धोने के लिए लौंड्री के अलग से पैसे देने पड़ते हैं. वह सब तो ठीक है लेकिन इस के अलावा भी ऋचा के अपने ऊपरी खर्चे हैं. इस के चलते उस की पौकेट मनी महीने के बीच में ही कम पड़ने लगती है. वह कहती है कि कितने भी ध्यान से खर्च करो पर महीने के अंत तक पौकेट मनी खत्म हो जाती है और फिर उसे अपने मांपापा से पैसे मांगने पड़ते हैं.

पटना का रहने वाला दीपक, दिल्ली में रह कर जौब की तैयारी कर रहा है. यहां वह 4 लड़कों के साथ रूमशेयरिंग में रहता है. वह कहता है, उस के पापा रेलवे में एक छोटी पोस्ट पर काम करते हैं. घर के खर्चे बहुत हैं लेकिन जब उस की पौकेट मनी बीच महीने में ही खत्म हो जाती है तो फिर उसे अपने पापा से पैसे मांगते शर्म आती है. वह कोई पार्टटाइम जौब ढूंढ़ रहा है ताकि अपने खुद के खर्चे निकाल सके लेकिन फिर सोचता है कि कहीं उस की पढ़ाई पर असर न पड़े.

पौकेट मनी का जुगाड़ युवाओं के लिए हमेशा से ही समस्या रही है. महीने के शुरुआती दिनों में जेब गरम और फिर धीरेधीरे नरम पड़ने लगती है तो उन्हें समझ नहीं आता कि अब क्या करें?

आजकल अच्छे कैरियर के लिए स्टूडैंट्स को स्कूलिंग पूरी होते ही पढ़ाई के लिए अपने शहर से दूर बड़े शहरों की तरफ जाना पड़ता है. वहां पढ़ाई के अलावा उन के सामने खर्चों की चिंता खड़ी हो जाती है. वे चाहते हैं कि उन के पास पेरैंट्स के भेजे हुए पैसों के अलावा कुछ एक्स्ट्रा पैसे हों तो वे अपनी जरूरतें पूरी कर सकें.

स्टूडैंट्स लाइफ में फीस के अलावा भी कई और तरह के खर्चे होते हैं जैसे कि किताबें, यूनिफौर्म, स्टेशनरी, नोट्स के प्रिंटआउट आदि. इस के अलावा कभीकभार दोस्तों के साथ कहीं घूमनेफिरने और खाने में भी पैसे लगते हैं तो पौकेट मनी बीच महीने में ही खत्म हो जाती है. अब पेरैंट्स के आगे बारबार हाथ फैलाना भी उन्हें अच्छा नहीं लगता और दोस्तों से भी कितना ही उधार लेंगे. इसलिए कई छात्र इन समस्याओं से निबटने के लिए पार्टटाइम जौब जैसे औप्शन का सहारा लेते हैं, ताकि वे अपने छोटेमोटे खर्चों को खुद उठा सकें.

वैसे, आज के किशोर और युवा काफी स्मार्ट हैं. पौकेट मनी के लिए अपने पेरैंट्स पर डिपैंड रहने के बजाय वे खुद पैसे कमाने में विश्वास रखते हैं. इस के लिए वे पढ़ाई के साथसाथ पार्टटाइम जौब भी कर रहे हैं.

कई छात्र दिन में पढ़ाई और रात में कौल सैंटर में काम करते हैं तो कई औनलाइन ट्यूशन पढ़ा कर पैसे कमा रहे हैं. अगर आप भी पढ़ाई के साथसाथ पार्टटाइम जौब करना चाहते हैं तो आज के डिजिटल युग में यह बिलकुल भी मुश्किल नहीं है. आप घरबैठे ही अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए पैसे कमा सकते हैं.

गूगल औप्शन रिवार्ड्स

इस ऐप में गूगल की तरफ से हर हफ्ते कुछ सर्वे कराए जाते हैं, जिस में कुछ बेसिक सवालों के आसान जवाब देने होते हैं. इन सवालों के जवाब देने पर युवा और किशोर छात्र आसानी से खासी इनकम अर्न कर सकते हैं. जरूरी नहीं कि हर हफ्ते सर्वे हो. लेकिन जब भी सर्वे होगा, आप को नोटिफिकेशन मिल जाएगा. इस के अलावा अकाउंट सेटअप के समय हिंदी और इंग्लिश दोनों ही भाषाएं सलैक्ट करें ताकि ज्यादा पैसे कमा सकें.

फोटोग्राफी से होगी कमाई

आजकल अधिकांश युवा अपनी हर एक्टिविटी को फोटोज के जरिए संजो कर रखने की कोशिश करते हैं. ऐसे में जिन्हें फोटोग्राफी का शौक है वे इस के जरिए अच्छी कमाई कर सकते हैं. आप नेचर, एनिमल्स या किसी विशेष विषय की फोटो खींच कर औनलाइन ही एक अच्छा प्लेटफौर्म बना सकते हैं. वहां फोटो अपलोड कर के युवा इस से अच्छी कमाई कर सकते हैं. कई ऐसे ब्रैंड्स हैं जो आप को फोटोज क्लिक करने के छोटे व सरल मिशन भी देंगे जिन्हें पूरा कर के भी आप अच्छा पैसा कमा सकते हैं. इस के अलावा यहां गैटी इमेजेज जैसे पार्टनर्स के माध्यम से भी आप का कंटैंट डिस्ट्रिब्यूट किया जाता है

नोट्सजेन

छात्रों के लिए यह कमाल का ऐप है, जिस से आप न सिर्फ पैसे कमा सकते हैं बल्कि सीख भी सकते हैं. इस के लिए आप को सिर्फ अपने खुद के बनाए नोट्स दूसरों के साथ शेयर करने होंगे. इस ऐप पर अपने खुद के बनाए नोट्स को अन्य नोट्सजेन यूजर के साथ शेयर या अपलोड कर आप पौकेट मनी कमा सकते हैं. यहां आप कौम्पिटीटिव एग्जाम अलगअलग कोर्स और सबजैक्ट्स के लिखे नोट्स शेयर कर सकते हैं. वैब, एंड्रौयड और आईओएस से छात्र इस ऐप को डाउनलोड कर सकते हैं.

एमसेंट

एमसेंट ब्राउजर एक तरह का रिचार्ज ब्राउजर ऐप है, जिस के जरिए आप अपने मोबाइल रिचार्ज, बिल्स और डेटा के पैसे बचा सकते हैं. इस से किशोर और युवा सिंपल स्टैप्स के जरिए पैसे कमा सकते हैं. इस ऐप पर सिर्फ आप को इंटरनैट सर्च करना होगा. इस के साथ ही इस ब्राउजर पर वीडियो देखने, डाउनलोड करने, न्यूज पढ़ने, फेसबुक यूज करने से रिवार्ड मिलेंगे, जिस से आप अपना रिचार्ज करवा सकते हैं.

प्रोडक्ट्स को औनलाइन बेचें

औनलाइन विक्रेता बनना छात्रों के लिए औनलाइन पैसे कमाने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है खासकर यदि आप के पास दोस्तों का एक बड़ा नैटवर्क है और आप सोशल सेल व स्किल सीखने के इच्छुक हों. युवाओं के लिए इस औनलाइन जौब के बारे में सब से अच्छी बात यह है कि आप को प्रोडक्ट्स को औनलाइन बेचना शुरू करने के लिए किसी अनुभव की जरूरत नहीं है, न ही आप को लैपटौप या महंगे उपकरण की आवश्यकता है.

ब्लौगिंग

कई युवाओं को लिखने का शौक होता है. वे ब्लौग के जरिए अपने विचार लोगों से शेयर करना पसंद करते हैं. अगर आप के पास भी अच्छा लिखने का कौशल है तो फिर आप भी औनलाइन पैसे कमाने के लिए ब्लौगिंग शुरू कर सकते हैं. ब्लौगिंग किशोरों और युवाओं के लिए शीर्ष जौब में से एक है और छात्रों के लिए भारत में औनलाइन पैसे कमाने का सब से वैध तरीका है. आप Medium.Com या Vocal.media जैसी साइटों पर ब्लौगिंग कर के शुरुआत कर सकते हैं.

कंटैंट राइटिंग

होम–बेस औनलाइन राइटिंग जौब्स छात्रों के लिए वैध पार्टटाइम जौब है और बिना निवेश के छात्रों के लिए मुफ्त औनलाइन जौब्स है. इस के लिए आप को औनलाइन पार्टटाइम राइटिंग जौब खोजने की जरूरत है. छात्रों के लिए फ्रीलांस राइटिंग जौब कुछ बेहतरीन पार्टटाइम वर्क फ्रोम होम जौब है जिसे आप अपनी पढ़ाई के साथ जारी रख कर सकते हैं और पैसे भी कमा सकते हैं.

इस के लिए आप में केवल भाषा की अच्छी पकड़ और कुछ इंटरनैट शोध कौशल होनी चाहिए. ऐसी कई वैबसाइट्स हैं जो लेखनकार्य प्रदान करती हैं. इस के अलावा और भी कई वैबसाइट्स हैं जो कंटैंट राइटिंग जौब औफर करती हैं और रकम औफर करती हैं. लेखनकार्य किशोरों के लिए पैसा कमाने का अच्छा जरिया है.

फ्रीलांसिंग

छात्रों के लिए आर्टिकल राइटिंग जौब के अलावा फ्रीलांसिंग जौब भी अच्छे विकल्प हैं. यदि आप के पास अच्छी तकनीक है और आप किसी विशेष कौशल में अच्छे हैं तो आप पार्टटाइम जौब कर सकते हैं. यदि आप अच्छी कोडिंग, प्रोग्रामिंग, डिजाइनिंग, टाइपिंग, फोटोग्राफी आदि या कोई अन्य तकनीकी कौशल रखते हैं तो आप फ्रीलांसिंग जौब कर सकते हैं. कई प्रोफैशनल्स कंपनियां ऐसे जौब औफर करती हैं. कई ऐसी वैबसाइट्स हैं जो छात्रों को फ्रीलांस जौब औफर करती हैं.

सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर

आज हर आदमी के हाथ में स्मार्टफोन है और वह सोशल मीडिया से भी कनैक्ट है तो ऐसे में आप सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर बन सकते हैं और इस से अच्छी कमाई भी कर सकते हैं. वास्तव में यह युवाओं और किशोरों के लिए बेहतर विकल्प है. आप यूट्यूब, इंस्टाग्राम और टिकटौक जैसे चैनलों पर इंफ्लुएंसर बन सकते हैं. आप यहां शिक्षा, फिटनैस, परिवार, जीवनशैली, मनोरंजन और यात्रा आदि कंटैंट बना सकते हैं. इस के लिए आप को अच्छी वीडियो एडिटिंग और वीडियो कंटैंट प्रोडक्शन में अच्छी स्किल की

FOR More NewsPapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

आवश्यकता है. आप को यह भी सीखना होगा कि सोशल मीडिया पर ब्रैंड कैसे बनाया जाता है, ताकि आप सर्वश्रेष्ठ विज्ञापनदाताओं और प्रायोजकों को प्रभावित कर सकें.

सोशल मीडिया मैनेजमैंट

एक फ्रीलांस सोशल मीडिया मैनेजर बनना छात्रों के लिए सब से अच्छा औनलाइन काम हो सकता है. खासकर उन लोगों के लिए जिन्होंने एक बड़ी सोशल फौलोइंग बनाना सीख लिया है या भविष्य में सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर बनना चाहते हैं. सोशल मीडिया मार्केटिंग किशोरों के लिए सब से अच्छी रिमोट जौब में से एक है, क्योंकि रचनात्मक सोशल मीडिया प्रोफैशनल्स की बहुत मांग है जो अपने ग्राहकों को फौलोअर्स बढ़ाने और उस की सोशल मीडिया उपस्थिति का प्रबंधन करने में मदद कर सकते हैं. इस के अलावा यह बिना निवेश के छात्रों के लिए सब से अच्छी मुफ्त औनलाइन जौब्स में से एक है.

औनलाइन टीचिंग जौब

कोरोना महामारी के कारण स्कूल, कालेज, कोचिंग आदि औनलाइन हो गए हैं और कई छात्र घर से ही पढ़ाई करने लगे. लेकिन कोरोना के बाद भी होमस्कूलिंग और होम–बेस ट्यूशन जारी ही रहा और कई शिक्षक और शिक्षण पेशेवर अब घर से ही पार्टटाइम औनलाइन एजुकेशन जौब का विकल्प चुन रहे हैं.

कालेज के छात्रों के लिए औनलाइन ट्यूटरिंग जौब ढूंढ़ना भारत में छात्रों के लिए पैसे कमाने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है तो आप भी औनलाइन ट्यूशन से अच्छी कमाई कर सकते हैं. कई वैबसाइट्स अच्छी रकम पर औनलाइन ट्यूटरिंग जौब औफर करती हैं. आज औनलाइन ट्यूटर्स की बहुत मांग है क्योंकि व्यस्त जीवनशैली के कारण मातापिता के पास बच्चे की शिक्षा पर ध्यान देने का समय नहीं है.

टीचिंग जौब न सिर्फ अच्छे पैसे से आप के प्रेजैंटेशन स्किल्स को बढ़ाता है, बल्कि आप का कौन्फिडैंस भी बढ़ाता है. औनलाइन ट्यूटरिंग जौब के लिए सर्वश्रेष्ठ साइटों की इस सूची में भारत में काम करने के लिए सर्वश्रेष्ठ ट्यूटरिंग कंपनियां शामिल हैं.

माइक्रो जौब्स

माइक्रो जौब वैबसाइट्स ऐसी वैबसाइटें हैं जो छोटे जौब टास्क औफर करती हैं जो कुछ घंटों में पूरा किया जा सकता है. माइक्रो जौब्स में समीक्षा, लेखन, ब्लौग, कमैंट, फोरम पोस्टिंग और सोशल नैटवर्किंग साइटों आदि में अन्य सरल कार्य शामिल हैं. युवा और किशोर छात्र अपनी रुचियों और कौशल के आधार पर जौब्स का चयन कर सकते हैं. इन जौब्स को बढ़ावा देने से छात्रों को अपने कौशल और ज्ञान को बढ़ावा देने में मदद मिलती है.

किंडल

किंडल ऐप सभी मोबाइल, लैपटौप, आईपैड और किंडल पर उपलब्ध है. इस से पैसे कमाने का विकल्प मालूम करना आसान है.

यूट्यूब

यूट्यूब न केवल वीडियो का एक स्रोत है बल्कि यह आय का एक बढ़िया स्रोत भी है. किशोर और युवा छात्र अपनी रुचि के अनुसार यूट्यूब पर वीडियो, कौमेडी, गाना आदि डाल कर अपने लिए पौकेट मनी कमा सकते हैं.

औनलाइन सर्वेक्षण जौब

कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां उत्पादों की बिक्री बढ़ा कर अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए इस जौब की पेशकश कर रही हैं.

इस के अलावा यदि आप संगीत, नृत्य, योग, कराटे, पेंटिंग, तैराकी व अन्य खेल जैसे टैनिस, फुटबौल आदि में अच्छे हैं तो इसे अपार्टमैंट, कालोनी के आसपास रहने वाले लोगों को इन शौक को सिखाने के लिए पार्टटाइम के रूप में ले कर अच्छी कमाई कर सकते हैं. यह जौब न केवल आप को आत्मनिर्भर बनाएगा बल्कि आप में आत्मविश्वास भी भरेगा.

इस के अलावा आप बेबी सिटिंग या बूढ़े लोगों की देखभाल भी कर सकते हैं.

कई कौल सैंटर, अस्पताल, स्कूल, होटल आदि छात्रों को पार्टटाइम कस्टमर केयर जौब औफर कराते हैं. होम ट्यूशन भी आप पढ़ा सकते हैं. ओला, उबर ड्राइविंग लाइसैंस वाले छात्रों के लिए कैब ड्राइवर का पार्टटाइम जौब औफर करते हैं. सुपर मार्केट्स, शोरूम, रिटेल शौप्स पार्टटाइम सेल्स जौब औफर करते हैं.

आप पार्टटाइम जौब में पालतू जानवरों की देखभाल कर सकते हैं. उस से भी कमाई हो जाती है. डिलीवरी जौब जैसे, पिज्जा डिलीवरी, पिज्जा हट, डोमिनोज, मैक्डोनल्ड्स में भी अच्छी कमाई की जा सकती है. और भी कई अन्य जौब्स हैं जो

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

किशोर और युवा छात्र कर सकते हैं. इस के अलावा ऐसे बहुत सारे छोटेमोटे बिजनैस आइडिया मौजूद हैं जिन्हें स्टूडैंट्स भी कर सकते हैं और पैसे कमा सकते हैं जैसे कि एंट्रैंस एग्जाम, कौम्पिटीटिव बुक सेल कर सकते हैं. औनलाइन फौर्म भरना और फौर्म का प्रिंटआउट निकालना, फोटोग्राफी और फोटो एडिट करना, ट्रैवल और्गनाइजर और ट्रैवल टिकट बुक करने जैसे बिजनैस के काम कर के भी आप पैसे कमा सकते हैं.

आज शिक्षा काफी महंगी हो गई है. खानेरहने के लिए भी पैसे चाहिए होते हैं और कई पेरैंट्स इतना सब अफोर्ड नहीं कर पाते. इसलिए क्यों न अपने ज्ञान के माध्यम से पार्टटाइम जौब कर अपनी पौकेट मनी खुद कमा ली जाए. छात्रों के लिए पार्टटाइम जौब करना सब से अच्छा विकल्प है. इस से आप को किसी के सामने पैसे के लिए हाथ नहीं फैलाने पड़ते और न ही अपनी जरूरतों के साथ समझौता करना पड़ता है.

औनलाइन घरबैठे कमाई के कई तरीके हैं और आप आसानी से तय कर सकते हैं कि आप औनलाइन पैसे कैसे कमा सकते हैं. औनलाइन की सब से अच्छी बात यह है कि आप अपने समय के हिसाब से अपने घर से काम कर सकते हैं. पैसे कमाने के लिए कभी उम्र माने नहीं रखती. उदाहरण के तौर पर, 7 साल का एक यूट्यूबर बच्चा, छोटे बच्चों के खिलौने को रिव्यू कर लाखों की कमाई करता है तो आप क्यों नहीं कर सकते. पैसे कमाने के लिए अगर आप के पास जनून और काबिलीयत है तो आप को अपने पेरैंट्स से पौकेट मनी लेने की जरूरत ही कहां पड़ेगी.

लेकिन सावधान, फर्जी भी हो सकते हैं जौब औफर

कई बार धोखेबाज औनलाइन जौब के औफर का झांसा दे कर ठग लेते हैं. इसलिए जरूरी है कि किसी भी जौब औफर के लिए अप्लाई करने से पहले उस की पड़ताल करने के बाद ही अगला कदम उठाएं.

आलोक, बदला हुआ नाम, ने आपबीती सुनाई कि उसे एक जगह से जौब का औफर आया. काम मिल भी गया उसे, लेकिन फिर पता चला कि यह कंपनी ही झूठी है. ऐसे लोग अकसर उन लोगों को अपने जाल में फंसाते हैं जो नौकरी की तलाश में हैं. ऐसे जरूरतमंद लोगों का फायदा उठा कर ठग फर्जी मैसेज भेजने के साथ ही मिलतीजुलती फर्जी वैबसाइट भी बना लेते हैं. अगर आप के पास भी आकर्षक सैलरी पैकेज जौब औफर आता है तो साइबर फ्रौड से बचने के लिए एक बार उस की सत्यता की पहचान जरूर कर लें.

ऐसे करें सत्यता की पहचान

- अगर आप को काम का कम अनुभव है और अच्छी सैलरी का औफर मिल रहा है तो हो सकता है आप धोखेबाज के निशाने पर हैं.
- स्पैम मेल के जरिए अगर आप को नोटिफिकेशन मिला है तो आप को ज्यादा अलर्ट रहने की जरूरत है, क्योंकि यह फेक हो सकता है.
- फेक लिंक पर क्लिक करने से बचें.
- फर्जी वैबसाइट कई बार नौकरी का प्रचारप्रसार करती हैं, इसलिए उन के औफर लैटर एक्सैप्ट करने से पहले उन की वैबसाइट को अच्छी तरह से जांच लें.

ऐसे चैक करें

- अगर औफर लैटर में जानकारी अधूरी है तो उस पर हस्ताक्षर न करें.
- किसी भी कंपनी को जौइन करने से पहले उस कंपनी का नाम और पूरा डिटेल क्रौस चैक कर लें.
- इंटरव्यू या लिखित परीक्षा के बिना ही जौब औफर की जा रही है तो अलर्ट हो जाएं, क्योंकि हो सकता है वह फर्जी हो.
- अगर कोई आप से जौब के बदले पैसों की डिमांड कर रहा है तो ऐसे लोगों को साफ मना कर दें.
- भूल कर भी अपनी पर्सनल डिटेल किसी से शेयर न करें.

युवा फुजूलखर्ची से बचें

प्रतिस्पर्धा और महंगाई के इस दौर में पैसे की अहमियत हर इंसान को समझना जरूरी है. मगर कुछ लोग पैसों की अहमियत को नहीं समझते और धड़ल्ले से खर्च करते जाते हैं. खासकर किशोर और युवा बच्चों को लगता है कि मातापिता हैं तो पैसों की क्या चिंता. लेकिन मांबाप की मेहनत की कमाई गैरजरूरी चीजों में बरबाद करना अक्लमंदी नहीं है. अगर आज आप बचत की आदत डालेंगे तो भविष्य में आप का ही फायदा होगा.

दोस्तों का महंगा आईफोन, ब्रैंडेड कपड़े, जूते और नई बाइक देख कर मचलना स्वाभाविक है. लेकिन इस के लिए आप पैसे खुद कमाएं. दोस्तों से उधार लेने की आदत न डालें और न ही मातापिता पर डिपैंड रहें. किशोर और युवा अपनी जेबें देख कर खर्च करना सीखें, न कि मातापिता की.

आज के अनिश्चित समय में बेहतर और अस्थिर भविष्य के लिए आर्थिक प्लानिंग बहुत जरूरी है और यह काम युवावस्था से ही सीखना जरूरी है. ●

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

बौबी कटारिया जैसे लफंगे और छंटे इन्फ्लुएंसर्स सोशल मीडिया पर ढेरों हैं. जैसेतैसे फौलोअर्स बढ़ा कर उन्हीं की जेब में सेंध मार रहे हैं. सवाल इन इन्फ्लुएंसर्स का नहीं है, यह तो इन का काम है. सवाल इन्हें देखने वाले युवाओं का है कि क्यों वे जांचपरख नहीं पा रहे हैं ?

FOR More Newspapers & Magazines https://t.me/PaperMagzine

कबूतरबाजी के आरोप में फंसा इन्फ्लुएंसर बौबी कटारिया

बौबी कटारिया मशहूर यूट्यूबर है. कुछ समय पहले तक इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर उस की फैन फौलोइंग तगड़ी थी लेकिन आजकल उस ने अपने पेज डीएक्टिवेट किए हुए हैं. इस की वजह यह है कि बौबी उर्फ बलवंत कटारिया हाल ही में कबूतरबाजी के मामले में फंसा है. उस पर कई बेरोजगार युवाओं या कहें अपने फोलोअर्स को नौकरी दिलाने का झांसा दे कर लाओस भेजा, उन से अपने अनुसार गैरकानूनी काम करवाने का आरोप है. बताया जा रहा है कि इस में कई भारतीय फंसे हैं जिस की जांच अभी चल रही है.

इस मामले में कटारिया और अन्य के खिलाफ इमिग्रेशन एक्ट की धारा 10/24 और भारतीय दंड संहिता की धारा 323 (चोट पहुंचाना), 342 (गलत तरीके से कैद करना), 506 (आपराधिक धमकी), 420 (धोखाधड़ी), 364 (अपहरण), 370 (किसी भी व्यक्ति को खरीदना और गुलाम बनाना) और 120–बी (आपराधिक साजिश) के तहत मामला दर्ज किया गया है.

बात तब सामने आई जब कटारिया पर उत्तर प्रदेश के 2 युवकों (अरुण और मनीष) ने लाखों रुपए ले कर लाओस में बंधक बनाए जाने का आरोप लगाया. उन्होंने बताया कि वहां उन के साथ मारपीट हुई, पासपोर्ट छीन लिए गए और उन्हें अमेरिकी लोगों के साथ साइबर फ्रौड करने को मजबूर किया गया. जैसेतैसे युवक मौका पा कर वहां से भाग निकले और इंडियन एंबैसी पहुंच कर वापस इंडिया आए.

अरुण और मनीष का आरोप है कि जिस कंपनी में उन्हें बंधक बनाया गया, वहां करीब 150 इंडियन इसी प्रकार मानव तस्करी कर के लाए गए थे, जिन में महिलाएं भी थीं. इन सब को बौबी कटारिया जैसे अन्य दलालों ने नौकरी का झांसा दे कर मानव तस्करी कर के भेजा हुआ था.

दोनों युवक बेरोजगार थे. दोनों इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर बौबी कटारिया के टच में थे. बौबी ने अपने यूट्यूब चैनल पर विदेश में नौकरी का विज्ञापन पोस्ट किया था, जिस के बाद उन्होंने बौबी से कौंटैक्ट किया. दोनों ने बताया कि उन्होंने बौबी कटारिया को सोशल मीडिया पर कई बार देखा था जिस के चलते उन्हें उस की क्रेडिबिलिटी पर भरोसा था.

दरअसल इस पूरे मामले को देखा जाए तो जितनी गलती बौबी कटारिया की दिखाई देती है उस से कहीं ज्यादा उसे देखने वाले और फौलो करने वाले युवाओं की है. जो युवा बौबी कटारिया के शिकंजे में फंसे हैं उन्हें अब रोनेधोने की जगह अपनी गलती यह कहते स्वीकार करनी चाहिए कि ऐसे धूर्त इन्फ्लुएंसर्स के चक्कर में वे अपनी बेवकूफी के चलते ही फंसे हैं.

गुरुग्राम के रहने वाले बौबी कटारिया की वीडियोज में ऐसा कुछ भी नहीं कि उसे फौलो किया जाए या उसे देखा भी जाए. उस की रील्स से सिर्फ अक्खड़ भाषा, लफंगई, बदमाशी करने की सीख मिलती है. वह बीच सड़क पर गुंडों की तरह गाड़ी रोक कर कुरसी और टेबल लगा कर शराब पीता है.

एक वीडियो में वह पुलिस वाले के साथ बहस करता दिखाई देता है. यही नहीं, स्पाइस जैट की फ्लाइट में वह सिगरेट तक पीते दिखाई देता है. हैरानी की बात यह कि इस तरह की रील्स को बेरोजगार युवा लाइक और शेयर करते हैं. उन्हें यही पसंद है. वाहवाही करते हैं कि 'वाह कटारिया भाई, क्या वीडियो बनाई है.' और अब जब फंसे हैं तो माथा पकड़ कर बैठ गए हैं.

बौबी अपनी वीडियोज में कभीकभी सोशल वर्क का दिखावा करते दिखाई देता है. कई युवा इसी से इंस्पायर भी होते हैं. लेकिन देखने वाले इतना भी नहीं समझ पाते कि यह पूरा तिकड़म कैमरे के आगे शूट होता है ताकि उस की सोशल मीडिया पर रीच बढ़े. इन्फ्लुएंसर्स तो सोशल वर्क का नाटक कर ही अपने फौलोअर्स और व्यूज बढ़ाते हैं, इस से उन्हें तो पैसा मिल जाता है पर देखने वालों को क्या मिलता है?

बौबी कटारिया खातेपीते परिवार का है. जाहिर है, पैसे की पहले भी कमी नहीं थी और अब भी नहीं है. उसे देखने वाले ज्यादातर बेरोजगारी और नकारी झेल रहे हैं, सुबह उठते घर वालों के ताने सुनते हैं, यहांवहां लफंगों की तरफ घूमते हैं और बौबी जिस तरह सोशल मीडिया पर अपनी बौडी फ्लैक्स करता है, ये फौलोअर्स उसी की तरह सिग्मा मेल बनने की चाह में अपनी बौडी फ्लैक्स करते हैं.

सवाल यह कि बौबी या बौबी जैसे ही ढेरों लफंगे इन्फ्लुएंसर्स को समझ पाने की कूवत अभी तक युवाओं में आई क्यों नहीं? इस तरह के इन्फ्लुएंसर्स तो लूटेंगे ही, इन की दुकानें इसी तरह से चलती हैं. बौबी नहीं तो कोई और उस की जगह ले लेगा. इन्हें देखने वाले और इन्हें हीरो बनाने वाले फौलोअर्स इन की दुकानें चलने ही क्यों देते हैं?

–प्रतिनिधि ●

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

फर्श से अर्श तक इन्फ्लुएंसर नैन्सी त्यागी

सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर नैन्सी त्यागी कांस जैसे इंटरनैशनल स्टेज पर पहुंची तो लोगों ने उस के टैलेंट की तारीफ की. मगर हकीकत यह है कि नैन्सी जैसा टैलेंट इंडस्ट्री में भरा पड़ा है. बात नैन्सी के बैकग्राउंड स्टोरी की है.

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

इस साल संपन्न हुए 77वें कांस फिल्म फैस्टिवल में ऐश्वर्या राय बच्चन और कियारा आडवाणी जैसी बौलीवुड सैलिब्रिटीज ने शिरकत की लेकिन सारी लाइमलाइट ले उड़ी फैशन इन्फ्लुएंसर नैन्सी त्यागी. जिस नैन्सी त्यागी का नाम पहले कभी किसी ने नहीं सुना था, आज वह किसी पहचान की मुहताज नहीं है. वह विदेशी मीडिया में भी छा चुकी है.

आउटफिट से छाई

कांस फिल्म फैस्टिवल में सारे फोटोग्राफरों की नजर उस पर ऐसी अटकी कि फिर हटी ही नहीं. सभी फोटोग्राफर उस की तसवीरें खींचने में व्यस्त थे. नैन्सी के आउटफिट ने सब का ध्यान अपनी ओर खींचा था जिस की वजह से हर तरफ उस की चर्चा होने लगी. बात करें नैन्सी के आउटफिट की तो नैन्सी ने रेड कार्पेट पर 3 बार अपनी मौजूदगी दर्ज कराई.

जिस में पहले दिन उस ने पिंक रफल्ड गाउन पहना था. नैन्सी का यह गाउन इतना ब्यूटीफुल था कि सब की नजरें उसी पर टिकी हुई थीं. उस ने इस आउटफिट को बैकलैस कोर्सेट टौप, फ्लोइंग फिगर–हगिंग स्कर्ट, लौंग स्टौल के साथ पेयर किया था. उस ने ब्रेडेड हेयरस्टाइल, ब्लैक पर्स और ब्लैक ग्लव्स के साथ लुक को स्टाइल किया. वह इस गाउन की वजह से पूरी दुनिया में छा गई और रातोंरात एक स्टार बन गई.

नैन्सी ने यह गाउन एक महीने में खुद ही तैयार किया था. यह गाउन पूरे 1,000 मीटर कपड़े से बना था. इस का वजन 20 किलो था. नैन्सी को इसे बनाने में 1 महीने का समय लगा. उस के इस आउटफिट से विदेशी खासे प्रभावित दिखे.

अपने दूसरे आउडफिट के लिए उस ने हैड एंब्रौइडरी वाली साड़ी को चुना. इस साड़ी को भी नैन्सी ने खुद ही तैयार किया. वहीं तीसरे लुक के लिए नैन्सी ने ब्लैक आउटफिट पहना. इस आउटफिट को भी खुद नैन्सी ने ही स्टाइल किया है. इस आउटफिट में एक कोर्सेट, टेल वाली स्कर्ट और स्टौल का परफैक्ट ब्लैंड है. नैन्सी का यह लुक एलिगैंस और स्लीक था.

जब कांस फिल्म फैस्टिवल में एक रिपोर्टर ने उस से पूछा कि वह कैसा महसूस कर रही है तो नैन्सी ने बहुत ही मासूमियत के साथ जवाब देते हुए कहा, ''इतना बड़ा तो मेरा सपना भी नहीं था.'' उस ने आगे कहा, ''मैं ने अपना दिल और आत्मा दोनों इस पिंक गाउन को बनाने में लगा दिया.''

निजी जिंदगी

बात करें अगर उस की निजी जिंदगी की तो नैन्सी का जन्म 15 अप्रैल, 2001 को यूपी के बागपत जिले के बरनवा गांव में हुआ था. वह एक लोअर क्लास फैमिली से बिलौंग करती है. उस की स्कूलिंग बहुत मुश्किलों से हुई. 2020 में यूपीएससी परीक्षा की तैयारी

के लिए वह अपनी मां और भाई के साथ दिल्ली आई थी. फाइनैंस प्रौब्लम और कोरोना की वजह से वह कौचिंग जौइन नहीं कर पाई. उस वक्त वह खाली थी तो उस ने सोचा कि वह अपना टैलेंट दुनिया के सामने रखे. उस ने खुद की बनाई ड्रैस की वीडियोज बनानी शुरू कीं.

नैन्सी के डिजाइन की बात करें तो वह कई स्टैप्स में काम करती है, जैसे मूड बोर्डिंग, स्कैचिंग, फैब्रिक की सोर्सिंग और सिलाई. नैन्सी अपने डिजाइन के लिए हमेशा कपड़े, लेस वगैरह दिल्ली में सीलमपुर इलाके के शांति महल्ला मार्केट से खरीदती है.

मां के लिए किया

एक इंटरव्यू में नैन्सी ने कहा, ''मां को कारखाने से निकालना था. मेरी मां एक कोयला कारखाने में काम करती थी. उन के कपड़ों पर कोयले की राख लगी रहती थी. डर भी लगता था कि कहीं उन्हें कुछ हो न जाए. मुझे बस इतना कमाना था कि मैं उन्हें वहां से निकाल सकूं और अब मैं ने वह कर लिया. अब मैं उन्हें वापस उस कारखाने में नहीं जाने दूंगी.'' इन बातों से साफ जाहिर होता है कि नैन्सी ने यह सब अपनी मां के लिए किया.

भाई ने किया सपोर्ट

नैन्सी के इस मुकाम तक पहुंचने में उस के भाई आहान ने उस की बहुत मदद की है. एक यूट्यूब इंटरव्यू में उस ने बताया कि एक बार उस की सिलाई और मेकअप के सामान खत्म हो गए थे और उस के पास इतने रुपए नहीं थे कि वह इन्हें खरीद सके. तब उस के भाई आहान ने अपनी स्कूल फीस के पैसे उसे अपने सामान खरीदने के लिए दे दिए. यही कारण है कि आज नैन्सी अपने हर कार्यक्रम में भाई को साथ ले कर चलती है.

सोशल मीडिया का सफर

नैन्सी त्यागी को इन्फ्लुएंसर के तौर पर पहचान तब मिली जब इंस्टाग्राम पर उस की वीडियोज वायरल होने लगीं. नैन्सी खुद से ड्रैस सिल कर अपने अकाउंट पर पोस्ट किया करती थीं. शुरुआती दिनों में नैन्सी को अपने अलग अंदाज के लिए ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा था लेकिन फिर नैन्सी ने अपना तरीका बदला, अपने पोस्ट करने के स्टाइल को चेंज किया और लोगों को उस का टैलेंट नजर आने लगा.

आज नैन्सी के इंस्टाग्राम पर 2 मिलियन लोग फौलो कर रहे हैं और उस की कांस वाली पोस्ट पर 1.9 मिलियन लाइक्स हैं. यह नैन्सी का टैलेंट ही है जो उसे कांस फिल्म फैस्टिवल जैसे अंतर्राष्ट्रीय प्लेफौर्म तक ले कर गया है. लेकिन कौन कह सकता है कि यह वही लड़की है जो कभी सुसाइड करने के बारे में सोचती थी.

दुनिया ने की तारीफ

नैन्सी की खुद से सिली ड्रैस के लिए सोनम कपूर, ईशा गुप्ता, अर्जुन कपूर, देवोलीना भट्टाचार्जी समेत कई सैलिब्रिटीज और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स ने उस की तारीफ की है. वहीं, नैन्सी की वीडियो देख लोगों ने कांस फिल्म फैस्टिवल जैसे बड़े मंच पर हिंदी बोलने को ले कर नैन्सी को खूब सराहा है.

सैलिब्रिटी दे रहे औफर

कांस में नाम कमाने के बाद सोनम कपूर ने उन्हें अपने लिए कपड़े डिजाइन करने को कहा. वे चाहती हैं कि नैन्सी उन के लिए कपड़े डिजाइन करे. नैन्सी ने शाहरुख खान के लिए कोटपैंट सिलने की इच्छा जाहिर की है.

ब्रैंड्स बढ़ा रहे हाथ

नैन्सी ने अपनी स्किल्स की वजह से काफी पौपुलैरिटी हासिल कर ली है. यही वजह है कि कई पौपुलर ब्रैंड्स उन के साथ कोलेबोरेशन कर रहे हैं. उन में गूगल इंडिया, टाटा सीएलआईक्यू, निवया, टोट एंड की और पौंड्स जैसे ब्रैंड्स शामिल हैं. इन की पौपुलैरिटी को देखते हुए आने वाले दिनों में हो सकता है कि यह लैक्मे फैशन वीक जैसे बड़े ब्रैंड्स के साथ कोलैब करे.

कैसे मिला चांस

नैन्सी ने ब्रूट इंडिया स्क्वाड के सदस्य के रूप में कांस रेड कार्पेट पर एंट्री ली थी. आप को बता दें कि ब्रूट इंडिया स्क्वाड कांस का आधिकारिक भागीदार है. यह सालदरसाल देश के सर्वश्रेष्ठ और सब से लोकप्रिय क्रिएटर्स को कांस में जाने का मौका देता है. इस बार ब्रूट की लिस्ट में नैन्सी त्यागी, आयुष मेहरा, नमिता थापर, विराज घेलानी, आर जे करिश्मा, अंकुश बहुगुणा, संज्योत कौर, राज शमानी, विष्णु कौशल, शरण हेगड़े और आस्था शाह शामिल थे.

नैन्सी जैसे इन्फ्लुएंसर का कांस फिल्म फैस्टिवल में जाना बाकी इन्फ्लुएंसर्स के लिए रास्ते खोलने जैसा है. यहां से निकलने के बाद नैन्सी के पास बड़ेबड़े औफर हैं. वह अलगअलग चैनल को इंटरव्यू दे रही है, पोडकास्ट में जा रही है, कंपनियों के साथ कोलैब कर रही है. सही मानो में नैन्सी ने सोशल मीडिया का अच्छा यूज किया है, बजाय 15-15 सैकंड की इंस्टाग्राम रील्स में नाचनेगाने के, उस ने स्किल्स को अपना साथी बनाया.

लेकिन आशंका यह भी है कि जिस तरह से नैन्सी एक दिन में दुनियाभर में फेमस हो गई, कहीं ऐसे ही एक दिन अचानक गायब न हो जाए, क्योंकि नैन्सी जैसे हजारों लोग पहले से ही हैं. नैन्सी आज अगर इतनी आगे बढ़ पाई तो उस में स्किल्स से कहीं ज्यादा उस की बैकग्राउंड स्टोरी की भूमिका है. दरअसल होता अकसर यह है कि जो लोग जल्दी सफलता प्राप्त कर लेते हैं, वे अपने रास्ते से भटक जाते हैं. उन पर कामयाबी सिर चढ़ कर बोलने लगती है, क्योंकि इतनी कामयाबी हजम नहीं होती. कहीं ऐसा ही नैन्सी के साथ भी न हो. ●

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

सोशल मीडिया पर नफरती कंटैंट धड़ल्ले से चलता तो है पर अब चुनाव रिजल्ट के बाद माहौल बदला है. अब इस तरह के कंटैंट से जेल जाने का खतरा भी बना हुआ है. इन्फ्लुएंसर धीरेंद्र राघव इस का उदाहरण है जो सलाखों के पीछे बंद है.

अधकचरी जानकारी और कुबुद्धि के शिकार इन्फ्लुएंसर धीरेंद्र राघव को सबक

लेख • रोहित

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

आखिर क्या कारण है कि सोशल मीडिया नफरत फैलाने का अड्डा बनता जा रहा है? क्यों सरकार इन लोगों पर लगाम नहीं लगा पा रही? धीरेंद्र राघव जैसे सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स को धार्मिक भावनाएं भड़काने की हिम्मत कहां से मिल रही है? और सब से ज्यादा जरूरी बात यह कि इन जैसे इन्फ्लुएंसर्स से युवा छुटकारा कैसे पाएं? ये वे सवाल हैं जिन्हें आज सोशल मीडिया यूज करने वाले हर यूजर को जानने की जरूरत है.

हाल के समय में सोशल मीडिया पर धार्मिक भावनाएं भड़काने वाली रील्स और पोस्ट खूब वायरल होने लगी हैं. मेटा का व्हाट्सऐप इस तरह के कंटैंट फैलाने वाला घोषित प्लेटफौर्म तो था ही, अब इंस्टाग्राम भी उसी राह चलने लगा है. जाहिर है, कुबुद्धि के शिकार जो लोग व्हाट्सऐप पर नफरत फैला रहे हैं उन्होंने रील्स को भी अपना हथियार बनाना शुरू कर दिया है.

इन नफरती इन्फ्लुएंसर्स के लिए सोशल मीडिया सब से सहूलियतभरी जगह बन कर उभरी है. यहां न तो कोई देखरेख है न संपादन करने वाला डैस्क, न ही रोकटोक. कहने को मेटा के अपने कानून तो हैं पर नाम के. इन्फ्लुएंसर्स के मन में जो भी अनापशनाप है, बेझिझक कह देता है चाहे फेक न्यूज के जरिए या गालियों के जरिए.

वायरल होना पड़ गया भारी

ऐसी ही झूठ की दुकान चलाने वाला सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर धीरेंद्र राघव है, जो फिलहाल पुलिस की कस्टडी में है. मामला यों है कि लोकसभा चुनाव 2024 में बीजेपी को बहुमत नहीं मिला और वह 240 पर ही सिमट गई. 400 पार नारा देने वालों के लिए एक तरह से यह नैतिक हार थी, क्योंकि राम मंदिर के नाम पर लड़ने वाले फैजाबाद लोकसभा सीट से चुनाव हार गए जहां अयोध्या पड़ता है.

बीजेपी के समर्थक इस बात से नाराज चल रहे थे और इस हार का ठीकरा वे अयोध्या में रहने वाले हिंदुओं पर फोड़ रहे थे. धीरेंद्र राघव उन इन्फ्लुएंसर्स में से एक था जो सोशल मीडिया पर इस बात को और भी हवा दे रहा था. उस की एक वीडियो इस बीच खूब वायरल होती है जिस में वह जानबूझ कर मुसलिम गेटअप ले कर हिंदुओं को कोसता नजर आता है ताकि लोग उसे मुसलिम ही समझें और ऐसे भ्रम फैलाता है जिस से धार्मिक माहौल बिगड़े और लोग मुसलमानों को गलियां दें.

धीरेंद्र राघव 5 जून को अपलोड किए अपने एक वीडियो में कहता है, ''दोगले हिंदुओं बच गए तुम इस बार, हाथ में सरकार आतेआते रामभक्त हिंदुओं ने बचा लिया.'' वह आगे कहता है, ''इस बार तो बच गए, अगली बार हमारी सरकार आ गई तो समझ लेना क्या होगा.''

करीब 1 मिनट 10 सैकंड वाली इस वीडियो में वह हिंदुओं को काफिर कहते हुए बोलता है कि मोदी ने तुम्हारे लिए मंदिर बनवा दिया, फिर भी तुम ने उसे अयोध्या में हरा दिया. अगर वह मसजिद बनवाता तो हम उसे वोट देते. इस के अलावा, वह मुसलिम आरक्षण की भी बात करता है.

मामले और भी

यह कोई पहला मामला नहीं जब धीरेंद्र राघव ने इस तरह की वीडियो बनाई हो. ऐसी पगलैट हरकतें उस की काफी पहले से चलती आ रही हैं. इस से पहले भी वह मुसलिम वेशभूषा में ढेरों वीडियो बनाता रहा है. कुछ रील में वह पाकिस्तानी आतंकी तक बना हुआ है और उस में भारत विरोधी बातें कह रहा है, ताकि लोगों में भ्रम पैदा हो.

जाहिर है यह नैशनल सिक्योरिटी से जुड़ा मसला है जिस पर मजाक में भी ऐसी रील नहीं बनाई जानी चाहिए. मगर सैयां भए कोतवाल तो डर काहे का. धीरेंद्र का केस आम केस नहीं है, बल्कि यह कोरोना से भी घातक बीमारी का केस है जो सोशल मीडिया में फैल रहा है.

धीरेंद्र ने अपने इंस्टा अकाउंट में तकरीबन 1,000 रील्स डाली हैं. उस की 2-3 साल पुरानी शुरुआती रील्स देखें तो उस में नफरत वाली रील्स न के बराबर हैं. शुरुआती रील्स में तो वह फैमिली से जुड़े कंटैंट बनाता रहा है, जिस में फैमिली के साथ क्वालिटी टाइम वह बिताता दिखाई देता है, लेकिन नफरत ने कैसे उस की पर्सनल लाइफ को बदल दिया, यह धीरेंद्र राघव के मामले से समझा जा सकता है.

खोखला है धीरेंद्र

धीरेंद्र अपनेआप को आर्टिस्ट और सरकारी विभागों में ठेकेदार बता रहा है. यह तो जांच होनी ही चाहिए कि इस तरह के विकृत व्यक्ति को सरकारी ठेके किन कारणों से दिए जा रहे थे और ये ठेके दे कौन रहा था? क्या उसे सरकारी ठेके देने वाला भी खुद इसी तरह विकृत स्वभाव का है?

थाना न्यू आगरा मऊ रोड, खंदारी का रहने वाला धीरेंद्र राघव खुद को सोशल मीडिया एक्टिविस्ट बताता है. अब कोई पूछ सकता है कि किसानमजदूरों के लिए उस ने कौन सा आंदोलन खड़ा कर दिया कि उसे एक्टिविस्ट कहा जाए, छात्रों के एग्जाम में धांधली में उस ने क्या कह दिया जो वह खुद को एक्टिविस्ट कहे, दलितोंपिछड़ों के हकों के लिए उस ने क्या किया? क्या अब नफरत बांटना एक्टिविज्म हो चला है?

अपनी जाति पर घमंड वही कर सकता है जो जातियों के भेद में विश्वास करता हो, जो खुद को ऊपर और दूसरे को नीचा मानता हो.

धीरेंद्र सिर्फ मुसलमानों के खिलाफ नफरत नहीं फैलाता, बल्कि वह खुद के राजपूत होने का घमंड करता है. अपनी जाति पर घमंड वही कर सकता है जो जातियों के भेद में विश्वास करता हो, जो खुद को ऊपर और दूसरे को नीचा मानता हो. समानता में भरोसा रखने वाला ऊंची जाति का व्यक्ति कभी खुद की जाति से अपनी पहचान बनाने की नहीं सोचेगा, मगर धीरेंद्र को अपनी जाति पर इतना घमंड है कि गाड़ी, बुलेट, मकान तो छोड़ो, उस ने अपने हाथ पर ही राजपूत का टैटू गुदवा रखा है.

धीरेंद्र राघव का इंस्टाग्राम पर वैरीफाइड अकाउंट बना हुआ है. फेमस होने का शौक है, इसलिए ब्लू टिक खरीद लिया है. उस के अकाउंट पर 47 हजार से अधिक फौलोअर्स हैं. ये फौलोअर्स धीरेंद्र की तरह सोच रखते हैं. आज धीरेंद्र राघव अपनी ही नफरती रील के चलते सलाखों के पीछे है, जिस पर वह सोचता रहा होगा कि वह तो एक्टिविज्म वाला काम कर रहा है लेकिन यही वह चीज है जो देश और समाज को खोखला कर रही है, यह बात अब हवालात में रह कर उसे जरूर समझ आ जाएगी.

यह भी सोच लेना चाहिए कि कल तक खुल कर नफरत की दुकान चलाने वाला धीरेंद्र राघव आज एकदो शिकायतों से ही जेल की सलाखों के पीछे पहुंच गया है. यानी चीजें बदल पड़ी हैं, अब किसी धर्म से नफरत की दुकानदारी से व्यू तो बटोरे जा सकते हैं पर जेल जाने का रिस्क भी उठाना पड़ सकता है. धीरेंद्र से सबक ले कर बाकी इन्फ्लुएंसर्स को सोचना होगा कि यही वह चीज है जिसे अब नहीं करना चाहिए बाकी देश की बुनियाद को तो यही चीज खोखला कर ही रही है. ●

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

मार्केट में कई ब्रैंड्स हैं जो अपने प्रोडक्ट्स में कहते कुछ हैं और असल में उन में होता कुछ और है. इस के खिलाफ इन्फ्लुएंसर रेवंत हिमतसिंग्का ने अपने कंटैंट से एक तरह से सोशल मीडिया कैंपेन ही छेड़ दिया है. कैसे, जानिए.

लेख • चंद्रकला

बड़े ब्रैंड पर भारी इन्फ्लुएंसर रेवंत हिमतसिंग्का

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

हर दिन सुबह से ले कर शाम तक आप कई तरह के हैल्दी कहे जाने वाले फूड प्रोडक्ट्स खाते हैं, जिन्हें हैल्दी न होने के बावजूद सोशल मीडिया और मेन स्ट्रीम मीडिया द्वारा ऐसे प्रमोट किया जाता है कि उन के ऊपर आसानी से विश्वास हो जाता है. इन में हैल्थ ड्रिंक से ले कर छोटेमोटे हैल्थ प्रोडक्ट्स शामिल हैं. मीडिया स्ट्रेटिजीज के चलते इन का भारतीय घरों में धड़ल्ले से इस्तेमाल किया जाता है.

कुछ समय पहले तक बौर्नविटा को हैल्थ ड्रिंक्स के तौर पर बेचा जा रहा था. कई सालों से घर में मांएं अपने बच्चों को बौर्नविटा हैल्थ ड्रिंक के रूप में सुबहशाम दे रही थीं. फिर एक यूट्यूबर ने बौर्नविटा के कुछ राज पब्लिक के सामने खोले, उस के बाद बौर्नविटा से हैल्थ ड्रिंक का टैग छीन लिया गया. कौन है वह यूट्यूबर?

कौन है रेवंत हिमतसिंग्का

यूट्यूबर रेवंत हिमतसिंग्का की उम्र 31 साल है. यह अपनेआप को फूडफार्मर के नाम

से बुलाता है. इस का जौनर यूट्यूब और इंस्टाग्राम हैंडल पर एफएमसीजी प्रोडक्ट्स से जुड़े वीडियोज अपलोड करने का है.

यूट्यूब चैनल फूडफार्मर पर इन के 7 लाख से अधिक फौलोअर्स हैं और इंस्टाग्राम हैंडल, जो इसी नाम से चलाया जाता है पर 25 लाख फौलोअर्स हैं. इंस्टा पर रेवंत को खूब पसंद किया जाता है. हाल ही में रेवंत ने अपने यूट्यूब चैनल पर पैकेज्ड फूड प्रोडक्ट्स पर लैबल पढ़ने को ले कर एक वीडियो 'लैबल पढ़ेगा इंडिया' शेयर किया. इस वीडियो में वह प्रोडक्ट्स के लैबल पर लिखी जानकारियों को साझा करता है.

इस वीडियो को अब तक साढ़े 4 लाख से ज्यादा व्यूज मिल चुके हैं. इस वीडियो में अर्चना पूरन सिंह, दिनेश कार्तिक, टैरेंस लुईस, अंकुर वारिको और टैक बर्नर जैसे कई सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स ने भारतीयों से कुछ कंज्यूम करने से पहले लैबल पढ़ने की रिक्वैस्ट की है.

कहां शुरू हुई कहानी

पिछले साल 1 अप्रैल, 2023 को यूट्यूबर रेवंत हिमतसिंग्का ने अपने सोशल मीडिया चैनल फूडफार्मर पर एक वीडियो डाला था. इस में वह दावा कर रहा था कि बौर्नविटा में चीनी ज्यादा है. यह वीडियो इतना वायरल हुआ कि वह रातोंरात मशहूर हो गया. इस परेश रावल जैसे सैलेब्स ने भी शेयर किया और ईटी से ले कर कई इंटनैशनल अखबारों ने भी इसे अपने न्यूजपेपर में जगह दी. इस के लिए उसे बौर्नविटा निर्माता कंपनी कैडबरी की तरफ से लीगल नोटिस भी जारी किया गया, जिस के बाद उन्होंने उस वीडियो को यह कहते हटा दिया था कि वे किसी लीगल चक्कर में नहीं पड़ना चाहते थे.

इस के बाद कहानी यहीं नहीं रुकी, वीडियो हटा दिए जाने के बाद कई लोगों ने रेवंत का सपोर्ट किया. बौर्नविटा का कहना था कि रेवंत की रिपोर्ट साइंटिफिक नहीं है. इस के जवाब में देश के कई लीडिंग डाक्टर्स और न्यूट्रीशनिस्ट ने एक डौक्यूमैंट साइन किया कि रेवंत की रिपोर्ट सही है.

इस का नतीजा यह निकला कि राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने बौर्नविटा बनाने वाली कंपनी मौंडेलेज इंटरनैशनल इंडिया लिमिटेड को नोटिस भेजा और इस का जवाब मांगा. इस के बाद से रेवंत सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर के तौर पर फेमस हो गया.

बड़ी कंपनियां अब नहीं कर सकतीं अनदेखी

रेवंत इस के बाद रुका नहीं. एक के बाद एक कई कंपनियों की पोल खोलता रहा और लोगों को जागरूक करता रहा. आम लोगों से ले कर फेमस लोगों तक उस की वीडियोज लाइक और शेयर कर रहे हैं. वह यूट्यूब पर ऐसे प्रोडक्ट्स की पोल खोलता है जो अपने दावों से अलग भ्रामक लैबल इस्तेमाल कर के लोगों की हैल्थ से खिलवाड़ करते हैं.

इस के साथ ही पिछले ही साल अप्रैल से हेमंत ने अपने सोशल मीडिया पोस्ट्स के जरिए भारत में लगभग सभी एफएमसीजी कंपनियों के प्रोडक्ट्स पर वीडियोज बनाईं. वह ऐसी कंपनियों को लगातार टारगेट कर रहा है. इस के चलते उस पर कई मुकदमे भी हुए हैं, जिस से वह लोगों के बीच और भी फेमस हो गया.

इस के बावजूद यूट्यूबर रेवंत तकरीबन रोज सुबह खाए जाने वाले विभिन्न तरह के ब्रैंडेड प्रोडक्ट्स को ले कर चौंकाने वाले खुलासे करता रहता है.

अपने एक वीडियो में वह बौर्नविटा की ही तरह लगभग हर मिडिल क्लास में इस्तेमाल होने वाले ब्रैड–बटर के बारे में बात करता है और कहता है कि भारत में 2 प्रकार की ब्रैड मिलती हैं, ''एक जो खुले तौर पर स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं (सफेद ब्रैड) और दूसरी, ब्राउन या मल्टीग्रेन या होलव्हीट ब्रेड जो स्वास्थ्य के लिए फायदे का दिखावा करती हैं जबकि वे नहीं हैं.''

वह आगे कहता है, ''सफेद ब्रैड में केवल मैदा भरा होता है. उस में फाइबर बिलकुल नहीं होता क्योंकि इसे बनाने के दौरान इस में जर्म और ब्रेन की परतें हटा दी जाती हैं. वहीं, ब्राउन ब्रैड जिसे स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है, सिर्फ ब्राउन कैरमेल रंग 150ए के कारण होती है. ये कैरेमल रंग 150ए कोक और बौर्नविटा में इस्तेमाल होता है.''

अपने एक दूसरे वीडियो में वह न्यूट्रेला, जिसे हैल्थ के प्रति जागरूक लोग बहुत पसंद करते हैं और ब्रेकफास्ट में खाते हैं, के बारे में कहता है कि यह कोई ब्रेकफस्ट डिश नहीं है बल्कि यह एक डेजर्ट है. जिसे लोग रोजरोज नहीं खाते. वह कहता है कि इस के 100 ग्राम के पैक में 50 ग्राम तो शुगर होती है. इस के अलावा उस ने अपनी वीडियोज में कोल्डड्रिंक, किंडर जौय, मैगी कैचअप और भी कई बड़ेबड़े ब्रैंड्स की बात की है.

इन्फ्लुएंसर का इंफ्लुएंस

गैरजिम्मेदार इंफ्लुएंसर से अलग रेवंत जैसे इंफ्लुएसर्स देश में कुछ बदलावों को हवा देते हैं. इन की बातें कहीं न कहीं असर तो डालती ही हैं, साथ में जागरूकता पैदा भी करती है, उन इन्फ्लुएंसर्स से अलग जो सिर्फ लाइक और शेयर के लिए गालियों और बेवकूफियों का सहारा लेते हैं. इस से अलग रेवंत का फेमस होना यह बात भी साबित करता है कि सोशल मीडिया पर इंगेज लोग हैल्थ से जुड़े टौपिक्स के लिए भी उतने ही सीरियस हैं जितने लाइफस्टाइल और फैशन के लिए.

उस से अलग जो केवल दिन के 3 घंटे सोशल मीडिया पर अपना वक्त अटपटी चीजों को देखने और उन्हें वैटेज देने में बरबाद करते हैं, रेवंत जैसे लोगों का कंटैंट कुछ जानने लायक है और सोशल मीडिया इस्तेमाल करने वालों को चाहिए कि वे ऐसे लोगों को सराहें और उन की आवाज सुनें ताकि इसी बहाने बड़ी कंपनियों और भ्रामक विज्ञापनों पर कुछ तो लगाम लगाई जा सके. ●

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

आलिया कश्यप

का बोल्ड अंदाज काम में कब दिखेगा

लेख
• किरण आहूजा

FOR More Newspapers & Magazines https://t.me/PaperMagzine

बौलीवुड के मशहूर निर्देशक अनुराग कश्यप की बेटी आलिया कश्यप अपने कैरियर के शुरुआती दौर में है. वह बोलने और दिखने में बोल्ड है पर अपने पिता की लेगैसी को वह कितना आगे पहुंचा पाएगी, यह देखने वाली बात है.

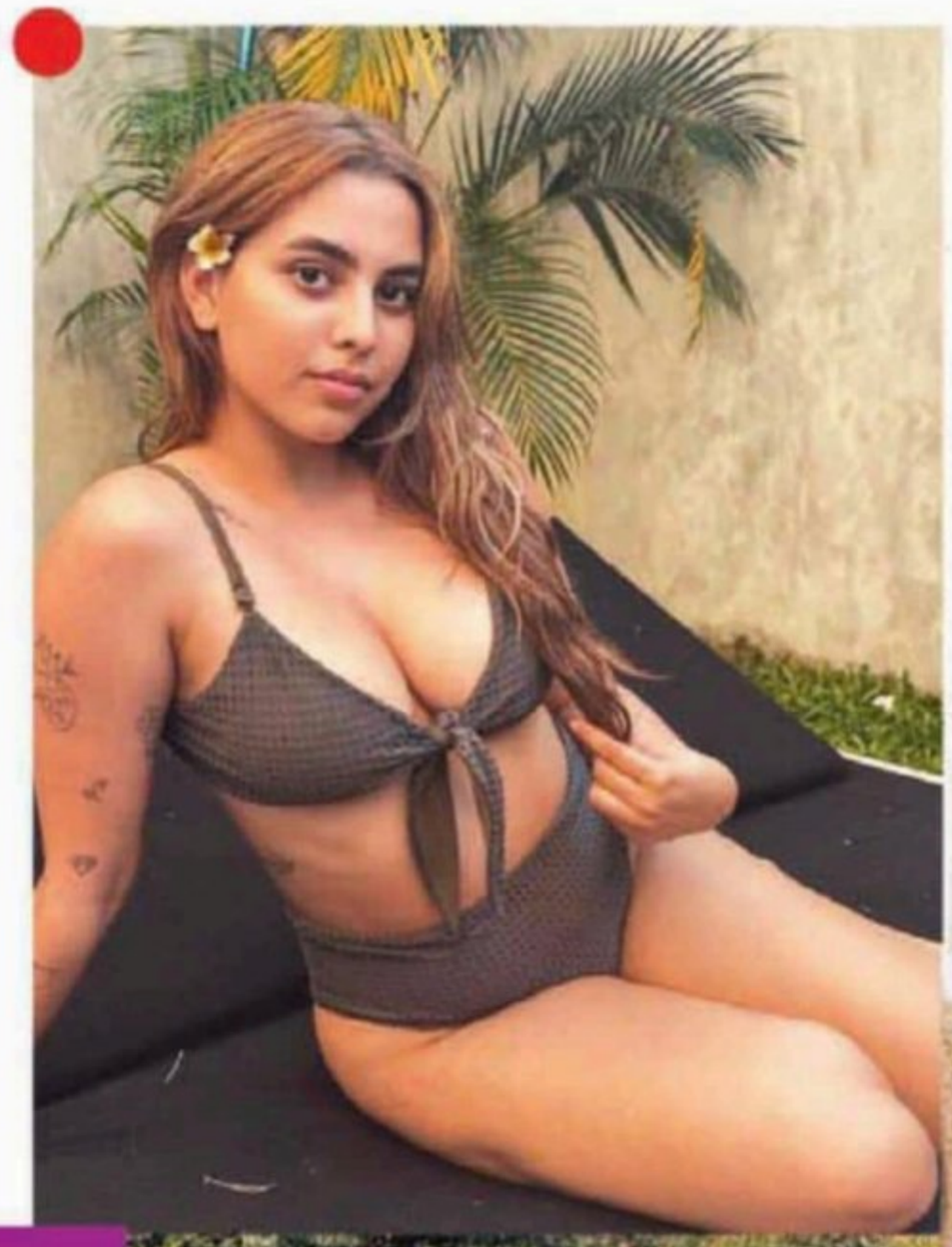

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

आलिया कश्यप बौलीवुड के जानेमाने फिल्म निर्माता अनुराग कश्यप और आरती बजाज की बेटी है. आलिया के निर्देशन में पहली डौक्यूमैंट्री फिल्म 'दि बिगिनर्स' 2019 में रिलीज हुई थी जोकि उस की फिल्म निर्माण यात्रा की शुरुआत थी. उस ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफौर्म पर भी अपनी रचनाओं को साझा किया है और उस का कंटैंट युवाओं ने काफी पसंद किया. आलिया कश्यप एक सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर भी है. इंस्टाग्राम पर उस के काफी फौलोअर्स हैं. उस ने अपनी पोस्ट्स में फैशन, जीवनशैली और व्यक्तिगत अनुभव साझा किए हैं. पापा अनुराग कश्यप के साथ उस की बहुत गहरी बौंडिंग है और वह उन के सपोर्टिव रिलेशनशिप को अकसर हाईलाइट करती है.

आलिया ने 'द पीकौक' मैगजीन जैसी विभिन्न पत्रिकाओं के लिए फोटोशूट करवाए हैं. अपने एक ब्लौग में आलिया ने बताया कि वह पहली बार अपने प्रेमी शेन ग्रेगोइरे से एक डेटिंग ऐप के जरिए मिली थी. एक डेटिंग ऐप के प्रचार के तहत आलिया ने एक बार सोशल मीडिया पर पोस्ट किया था, 'जब हम सिंगल होते हैं तो डेटिंग प्रक्रिया पर भरोसा करना एक चुनौती हो सकती है. मैं ने शेन के साथ विश्वास की छलांग लगाई और आज मैं बहुत खुश हूं कि मैं ने ऐसा किया.' ●

वायरल वीक्स

सोशल मीडिया पर कुछ न कुछ नया वायरल होता रहता है, जो सब का ध्यान खींच लेता है. इन में कुछ अटपटे भी होते हैं.

सोशल मीडिया पर आजकल गजगामिनी वाक खूब ट्रैंड पर है. वैब सीरीज 'हीरामंडी' में अदिति राव हैदरी कमर मटकाते हुए गजगामिनी वाक करती है. इसी सीन को सोशल मीडिया पर इन्फ्लुएंसर्स रीक्रिएट करते जा रहे हैं. कुछ ने तो इसे हूबहू कौपी भी किया है. हालांकि यह सीन न सिर्फ सीरीज में, बल्कि सोशल मीडिया प्लेटफौर्म पर भी हाइप बन गया है.

एक रील इन दिनों इंस्टाग्राम पर वायरल हो रही है, जिस में एक आदमी ने अपनी छोटी सी नाव में कुछ डंडे लगा दिए हैं और इन डंडों के बीच में बड़ेबड़े बरतन लगा दिए हैं. लोग उस डंडे पर बैठे हैं और बरतन के अंदर अपना पैर रखा हुआ है. यह जुगाड़ तो अच्छा है लेकिन सुरक्षा के लिहाज से यह काफी खतरनाक साबित हो सकता है.

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

इंस्टाग्राम पर एक रील इन दिनों खासी वायरल हो रही है. इस रील में व्हाइट टौप और जींस पहनी एक लड़की काफी देर से स्कूटी स्टार्ट करने की कोशिश कर रही है लेकिन स्कूटी स्टार्ट ही नहीं हो रही. स्कूटी इसलिए स्टार्ट नहीं हो रही क्योंकि लड़की बारबार स्कूटी के स्टैंड पर किक मार रही है. इस रील को अब तक लाखों लोग देख चुके हैं. अब यह लड़की की बेवकूफी है या जानबूझ कर बनाई गई रील है, यह अलग विषय है.

संजू टेकी नाम के एक यूट्यूबर ने एक व्लौग वीडियो इंटरनैट पर पोस्ट किया, जिस में टाटा सफारी एसयूवी के अंदर पानी भर कर स्विमिंग पूल बनाया गया था. व्लौगर ने मलयालम फिल्म 'आवेशम' से प्रेरित हो कर ऐसा किया है. इस रील के वायरल होते ही उसे लेने के देने पड़ गए हैं और पुलिस ने चालक के ड्राइविंग लाइसैंस के साथ गाड़ी का रजिस्ट्रेशन कैंसिल कर दिया है.

आज के समय में हर कोई सोशल मीडिया पर फेमस होना चाहता है, फिर चाहे उसे इस के लिए कुछ भी करना पड़े. ऐसी ही एक रील इंस्टाग्राम पर इन दिनों वायरल हो रही है. इस रील में नजर आ रहा है कि एक महिला टौयलेट कमोड में बैठी हुई है और उस ने कमोड पर कड़ाही रख कर उसे चूल्हा बना लिया है. इस वायरल रील ने लोगों का दिमाग खराब कर दिया है. लोग सोच में पड़ गए हैं कि आखिर इस पर बना खाना खाएगा कौन?

FOR More Newspaper Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

सोशल मीडिया पर वायरल होती एक रील में अयोध्या मंदिर परिसर में एक बच्चा मंदिर आने वालों को चंदन का टीका लगा रहा है. वीडियो बनाने वाला शख्स उस से बात करते हुए उस की कमाई पूछता है तो पता चलता है वह टीका लगाने से ही 1,500 रुपए कमा रहा है. सोशल मीडिया पर लोग उस की कमाई का लेखाजोखा लगाते एक डाक्टर की तनख्वाह से कंपेयर कर रहे हैं. जरा सोचिए, अगर इन युवा प्रतिभाओं को सही शिक्षा या व्यावसायिक मार्गदर्शन दे दिया जाए तो कहां से कहां पहुंच जाएंगे. लेकिन धर्म से बड़ा कोई धंधा है भला?

इंटरनैट पर प्राइमरी क्लास की वंशीबेन मनीषभाई के रिजल्ट की फोटो सोशल मीडिया में तेजी से वायरल हो रही है, जिस में उसे कुल अंक से अधिक अंक दिए गए हैं. छात्रा को गुजराती भाषा में 200 में से 211 नंबर और गणित में 200 में से 212 अंक दिए गए हैं. भई, यह मामला तो आजकल चल रहे नीट रिजल्ट से भी ज्यादा धांसू निकला. खैर, नीट के छात्र तो अभी भी माथा पकड़ कर बैठे हैं मगर गुजराती लड़की की मार्कशीट जरूर ठीक कर ली गई है.

FOR More Newspapers & Magazines https://telegram.me/PaperMagzine

हाल ही में इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर सीमा कनौजिया नाम की एक इन्फ्लुएंसर की रील तेजी से वायरल हो रही है. इस रील में उस ने हलके हरे रंग का सूट पहना हुआ है और एयरपोर्ट पर फनी डांस कर रही है. लोग उस से टकरातेटकराते बच रहे हैं. पहली नजर में तो वह कोई पागल लग रही है पर व्यूज और लाइक के चक्कर में इन्फ्लुएंसर ऐसी हरकतें करते ही रहते हैं.

–प्रियंका ●